# विषय-सूची

## त्रिक-निपात (११-१८)

## ३. तृतीय पंचाशतक


(११) १. संबोधि वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - २६५
१. पूर्वसंबोध सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - २६५
२. आस्वाद सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - - - - - २६६
३. आस्वाद सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - - - - - २६६
४. श्रमण-ब्राह्मण सुत्त - - - - - - - - - - - - - २६७
५. रोदन सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - २६७
६. अतृप्ति सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - २६८
७. अरक्षित सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - २६८
८. दूषित-चित्त सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - २६९
९. हेतु सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - - - - - - - २६९
१०. हेतु सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - - - - - - - २७०
(१२) २. अपाय (नरक) वर्ग - - - - - - - - - - - - २७२
१. नरक गामी सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - २७२
२. दुर्लभ सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - २७२
३. अपरिमेय सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - २७२
४. आनेञ्ज सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - २७३
५. असफलता-सफलता सुत्त - - - - - - - - - - - - २७४
६. अनुलोम मार्ग सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २७६
७. कर्मांत सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - २७६
८. शुचिता सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - - - - - २७८
९. शुचिता सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - - - - - २७८
१०. मौन सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - २८०
(१३) ३. कुसिनार वर्ग - - - - - - - - - - - - - - २८०
१. कुसिनार सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - २८०
२. कलह सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - - २८२
३. गोतमक-चेतिय सुत्त - - - - - - - - - - - - - २८३
४. भरण्डुकालाम सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २८३
५. हत्थक सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - २८५
६. उच्छिष्ट सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - २८६
७. अनुरुद्ध सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - - - - २८८

८. अनुरुद्ध सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - - - - - - २८८
९. प्रतिच्छन्न सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २८९
१०. रेख सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २८९
(१४) ४. योद्धाजीव वर्ग - - - - - - - - - - - - २९०
१. योद्धा सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९०
२. परिषद सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९२
३. मित्र सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९२
४. उत्पाद सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९२
५. केसकम्बल सुत्त- - - - - - - - - - - - - - २९३
६. संपदा सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९३
७. वृद्धि सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९४
८. अदमनीय सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९४
९. परिष्कृत अश्व सुत्त - - - - - - - - - - - - - २९५
१०. श्रेष्ठ-अश्व सुत्त - - - - - - - - - - - - - २९६
११. मोरनिवाप सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - - - २९७
१२. मोरनिवाप सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - - - २९८
१३. मोरनिवाप सुत्त (तृतीय) - - - - - - - - - - २९८
(१५) ५. मंगल वर्ग - - - - - - - - - - - - - २९८
१. अकुशल सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९८
२. सावद्य सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९९
३. विषम सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९९
४. अशुचि सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९९
५. मूलोच्छेद सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - - - २९९
६. मूलोच्छेद सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - - - ३००
७. मूलोच्छेद सुत्त (तृतीय) - - - - - - - - - - ३००
८. मूलोच्छेद सुत्त (चतुर्थ) - - - - - - - - - - - ३००
९. वंदना सुत्त - - - - - - - - - - - - - - ३०१
१०. पूर्वाह्न सुत्त - - - - - - - - - - - - - - ३०१
(१६) ६. अचेलक वर्ग - - - - - - - - - - - - - ३०१
(१७) ७. कर्म पर्याय - - - - - - - - - - - - - ३०४
(१८) ८. राग पर्याय - - - - - - - - - - - - - ३०६

# ३. तृतीय पंचाशतक

## (११) १. संबोधि वर्ग

### १. पूर्वसंबोध सुत्त

१०४. भिक्षुओ, बोधि-प्राप्ति से पूर्व, जब मैं संबुद्ध नहीं था, जब मैं बोधिसत्व था, तब मेरे मन में यह जिज्ञासा पैदा हुई –"लोक में 'आस्वाद' क्या होता है? लोक में 'दुष्परिणाम' क्या होता है? लोक में 'विमुक्ति' (=निस्सरण) क्या है?" तब भिक्षुओ, मेरे मन में यह हुआ –लोक में जो किसी भी प्रत्यय के फलस्वरूप सुख, सौमनस्य पैदा होता है यही लोक में 'आस्वाद' है; लोक में जो अनित्यता है, जो दुःख है, जो परिवर्तनशीलता (विपरिणामधर्मता) है, यही लोक में 'दुष्परिणाम' है; लोक में जो छंद (इच्छा)-राग का विनयन करना है, जो छंद-राग का प्रहाण है यही लोक में 'विमुक्ति' है।

"भिक्षुओ, मैंने जब तक इस लोक के 'आस्वाद' को 'आस्वाद' करके यथार्थ रूप से नहीं जाना, 'दुष्परिणाम' को 'दुष्परिणाम' करके यथार्थ रूप से नहीं जाना, 'निस्सरण' को 'निस्सरण' करके यथार्थ रूप से नहीं जाना, तब तक मैंने भिक्षुओ, इस स-देव, स-मार, स-ब्रह्म लोक में –जहां श्रमण-ब्राह्मण रहते हैं तथा जहां देव-मनुष्य रहते हैं –यह नहीं कहा कि मुझे अनुत्तर सम्यक संबोधि प्राप्त हो गई। क्योंकि भिक्षुओ, अब मैंने लोक के 'आस्वाद' को 'आस्वाद' करके यथार्थ रूप से जान लिया, 'दुष्परिणाम' को 'दुष्परिणाम' करके यथार्थ रूप से

जान लिया, 'निस्सरण' को 'निस्सरण' करके यथार्थ रूप से जान लिया, इसलिए भिक्षुओ, मैंने इस स-देव, स-मार, स-ब्रह्म लोक में –जहां श्रमण-ब्राह्मण रहते हैं तथा जहां देव-मनुष्य रहते हैं –यह कहा कि मुझे अनुत्तर सम्यक संबोधि प्राप्त हो गई, मुझे 'ज्ञान' हो गया, मुझे 'दृष्टि' उत्पन्न हो गई –'मेरी विमुक्ति अचल है, मेरा यह अंतिम जन्म है, मेरा अब पुनर्भव नहीं है।'"

## २. आस्वाद सुत्त (प्रथम)

१०५. "भिक्षुओ, मैंने लोक में 'आस्वाद' की खोज की; लोक में जो 'आस्वाद' है उसे जाना और लोक में जितना 'आस्वाद' है उस सब को भी प्रज्ञा से भली प्रकार जाना। भिक्षुओ, मैंने लोक में 'दुष्परिणाम' की खोज की। लोक में जो 'दुष्परिणाम' है उस सब को भी प्रज्ञा से भली प्रकार जाना। भिक्षुओ, मैंने लोक में 'निस्सरण' (विमुक्ति) की खोज की। लोक में जो 'निस्सरण' है उस सब को भी प्रज्ञा से भली प्रकार जाना।

"भिक्षुओ, मैंने जब तक इस लोक के 'आस्वाद' को 'आस्वाद' करके यथार्थ रूप से नहीं जाना; 'दुष्परिणाम' को 'दुष्परिणाम' करके यथार्थ रूप से नहीं जाना, 'निस्सरण' को 'निस्सरण' करके यथार्थ रूप से नहीं जाना, तब तक मैंने भिक्षुओ, इस स-देव, स-मार, स-ब्रह्म लोक में –जहां श्रमण-ब्राह्मण रहते हैं तथा जहां देव-मनुष्य रहते हैं –यह नहीं कहा कि मुझे अनुत्तर सम्यक संबोधि प्राप्त हो गई। क्योंकि मैंने भिक्षुओ, अब लोक के 'आस्वाद' को 'आस्वाद' करके यथार्थ रूप से जान लिया, 'दुष्परिणाम' को 'दुष्परिणाम' करके यथार्थ रूप से जान लिया, 'निस्सरण' को 'निस्सरण' करके यथार्थ रूप से जान लिया; इसलिए भिक्षुओ, मैंने इस स-देव, स-मार, स-ब्रह्म लोक में –जहां श्रमण-ब्राह्मण रहते हैं तथा जहां देव-मनुष्य रहते हैं –यह कहा कि मुझे अनुत्तर सम्यक संबोधि प्राप्त हो गई, मुझे 'ज्ञान' हो गया, मुझे 'दृष्टि' उत्पन्न हो गई –मेरी विमुक्ति अचल है, मेरा यह अंतिम जन्म है, मेरा अब पुनर्भव नहीं है।"

## ३. आस्वाद सुत्त (द्वितीय)

१०६. "भिक्षुओ, यदि लोक में 'आस्वाद' न हो तो ये प्राणी संसार में आसक्त न हों। क्योंकि भिक्षुओ, लोक में 'आस्वाद' है, इसलिए प्राणी लोक में आसक्त होते हैं। भिक्षुओ, यदि लोक में 'दुष्परिणाम' न हो तो ये प्राणी संसार से विरक्त न हों। क्योंकि भिक्षुओ, लोक में 'दुष्परिणाम' है, इसलिए प्राणी लोक से विरक्त होते हैं। भिक्षुओ, यदि लोक में 'निस्सरण' न हो तो प्राणी लोक से विमुक्त न हों। क्योंकि भिक्षुओ, लोक में 'निस्सरण' है, इसीलिए प्राणी लोक से विमुक्त होते हैं।

"भिक्षुओ, जब तक प्राणी संसार के 'आस्वाद' को 'आस्वाद' करके यथार्थ रूप से न जान लेते, संसार के 'दुष्परिणाम' को 'दुष्परिणाम' करके यथार्थ रूप से न जान लेते, संसार के 'निस्सरण' को 'निस्सरण' करके यथार्थ रूप से न जान लेते, तब तक भिक्षुओ, प्राणी इस स-देव, स-मार, स-ब्रह्म लोक से – जहां श्रमण-ब्राह्मण रहते हैं तथा जहां देव-मनुष्य रहते हैं – बाहर न निकलते, विसंयुक्त न होते, विप्रमुक्त न होते, बंधन-मुक्त चित्त से विहार न कर सकते। क्योंकि प्राणियों ने संसार के 'आस्वाद' को 'आस्वाद' करके यथार्थ रूप से जान लिया, संसार के 'दुष्परिणाम' को 'दुष्परिणाम' करके यथार्थ रूप से जान लिया, संसार के 'निस्सरण' को 'निस्सरण' करके यथार्थ रूप से जान लिया, इसीलिए भिक्षुओ, प्राणी इस स-देव, स-मार, स-ब्रह्म लोक से... बाहर निकलकर, विसंयुक्त होकर, विप्रमुक्त होकर, बंधन-मुक्त चित्त से विहार करते हैं।"

### ४. श्रमण-ब्राह्मण सुत्त

१०७. "भिक्षुओ, जो श्रमण या ब्राह्मण लोक के 'आस्वाद' को 'आस्वाद' करके, लोक के 'दुष्परिणाम' को 'दुष्परिणाम' करके, लोक के 'निस्सरण' (विमुक्ति) को 'निस्सरण' करके यथार्थ रूप से नहीं जानते, भिक्षुओ, न मैं उन श्रमणों की श्रमणों में गिनती करता हूं, न उन ब्राह्मणों की ब्राह्मणों में गिनती करता हूं, और न वे आयुष्मान इसी जीवन में 'श्रामण्य' वा 'ब्राह्मण्य' को साक्षात कर विहार करते हैं।

"भिक्षुओ, जो श्रमण या ब्राह्मण लोक के 'आस्वाद' को 'आस्वाद' करके, लोक के 'दुष्परिणाम' को 'दुष्परिणाम' करके, लोक के 'निस्सरण' को 'निस्सरण' करके यथार्थ रूप से जान लेते हैं, भिक्षुओ, मैं उन्हीं श्रमणों की 'श्रमणों' में गिनती करता हूं, उन्हीं ब्राह्मणों की 'ब्राह्मणों' में गिनती करता हूं; वे आयुष्मान इसी जीवन में 'श्रामण्य' वा 'ब्राह्मण्य' को साक्षात कर विहार करते हैं।"

### ५. रोदन सुत्त

१०८. "भिक्षुओ, यह जो 'गाना' है, यह आर्य-विनय के अनुसार 'रोना' ही है। भिक्षुओ, यह जो नाचना है, यह आर्य-विनय के अनुसार 'पागलपन' ही है। भिक्षुओ, यह जो देर तक दांत निकालकर हँसना है, यह आर्य-विनय के अनुसार 'बचपना' ही है। इसलिए भिक्षुओ, यह जो गाना है, यह सेतु ध्वंसनीय है, यह जो नाचना है, यह सेतु ध्वंसनीय है। धर्मप्रमुदित संत पुरुषों का मुस्कराना ही पर्याप्त है।"

## ६. अतृप्ति सुत्त

१०९. "भिक्षुओ, इन तीन बातों से तृप्ति नहीं होती। कौन-सी तीन बातों से?

"भिक्षुओ, सोने से तृप्ति नहीं होती; भिक्षुओ, सुरा-मेरय के पीने से तृप्ति नहीं होती; भिक्षुओ, मैथुन से तृप्ति नहीं होती। भिक्षुओ, इन तीन बातों का सेवन करने से तृप्ति नहीं होती।"

## ७. अरक्षित सुत्त

११०. एक समय अनाथपिण्डिक गृहपति भगवान के पास पहुँचा। पहुँच कर भगवान को अभिवादन कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे अनाथपिण्डिक गृहपति को भगवान ने यह कहा –

"गृहपति! चित्त अरक्षित रहने से कायिक-कर्मभी अरक्षित रहते हैं, वाचिक-कर्मभी अरक्षित रहते हैं, मानसिक-कर्मभी अरक्षित रहते हैं। जिसके काया, वाणी तथा मन के कर्म अरक्षित रहते हैं, उसके काया, वाणी, मन के कर्म 'चूते' (रिसते, स्रावी – तृष्णा के कारण स्राव वाले) हैं। जिसके काया, वाणी तथा मन के कर्म 'चूते' हैं, उसके काया, वाणी तथा मन के कर्म 'सड़े' होते हैं। जिसके काया, वाणी तथा मन के कर्म 'सड़े' होते हैं, उसका मरना अच्छी तरह नहीं होता, उसकी कालक्रिया(मृत्यु) अच्छी तरह नहीं होती।

"गृहपति! जैसे यदि कूटागार (शिखर वाला घर) अच्छी तरह से आच्छादित न हो, तो शिखर भी अरक्षित रहता है, कड़ियां भी अरक्षित रहती हैं तथा दीवार भी अरक्षित रहती है। शिखर भी चूता है, कड़ियां भी चूती हैं, दीवार भी चूती है। शिखर भी सड़ जाता है, कड़ियां भी सड़ जाती हैं, दीवार भी सड़ जाती है। इसी प्रकार गृहपति! चित्त के अरक्षित रहने पर कायिक-कर्म भी अरक्षित रहता है... कालक्रिया अच्छी तरह नहीं होती।

"गृहपति! चित्त रक्षित रहने से कायिक-कर्मभी रक्षित रहते हैं, वाचिक-कर्मभी रक्षित रहते हैं, मानसिक-कर्मभी रक्षित रहते हैं। जिसके काया, वाणी तथा मन के कर्म रक्षित रहते हैं, उसके काया, वाणी तथा मन के कर्म 'चूते' नहीं। जिसके काया, वाणी तथा मन के कर्म 'चूते' नहीं, उसके काया, वाणी तथा मन के कर्म 'सड़ते' नहीं। जिसके काया, वाणी तथा मन के कर्म 'सड़ते' नहीं, उसका मरना अच्छी तरह होता है, उसकी कालक्रिया भी अच्छी तरह होती है।

"गृहपति! जैसे यदि कूटागार (शिखर-गृह) अच्छी तरह से आच्छादित हो, तो शिखर भी सुरक्षित रहता है, कड़ियां भी सुरक्षित रहती हैं तथा दीवार भी सुरक्षित रहती है। शिखर भी नहीं चूता, कड़ियां भी नहीं चूतीं, दीवार भी नहीं चूती। शिखर भी नहीं सड़ता, कड़ियां भी नहीं सड़तीं, दीवार भी नहीं सड़ती। इसी प्रकार गृहपति! चित्त के सुरक्षित रहने पर कायिक-कर्म भी सुरक्षित रहते हैं... कालक्रिया भी अच्छी तरह होती है।"

## ८. दूषित-चित्त सुत्त

१११. एक ओर बैठे अनाथपिण्डिक गृहपति को भगवान ने यह कहा – "गृहपति! चित्त के खराब हो जाने (द्वेषयुक्त हो जाने पर) पर काया, वाणी तथा मन के कर्म भी खराब हो जाते हैं। जिसके काया, वाणी तथा मन के कर्म खराब हो जाते हैं, उसका मरना भी अच्छा नहीं होता, उसकी मृत्यु भी अच्छी नहीं होती।

"गृहपति! जैसे यदि कूटागार अच्छी तरह आच्छादित न हो तो शिखर भी खराब हो जाता है, कड़ियां भी खराब हो जाती हैं, दीवार भी खराब हो जाती है; इसी प्रकार गृहपति! चित्त के खराब होने पर काया, वाणी तथा मन के कर्म खराब होते हैं। जिसके काया, वाणी तथा मन के कर्म खराब हो जाते हैं, उसका मरना भी अच्छा नहीं होता, उसकी मृत्युभी अच्छी नहीं होती।

"गृहपति! चित्त के खराब न होने पर (द्वेषयुक्त न होने पर) काया, वाणी तथा मन के कर्म भी खराब नहीं होते, उसका मरना भी अच्छा होता है, उसकी मृत्यु भी अच्छी होती है।

"जैसे गृहपति! कूटागार की छत अच्छी तरह से आच्छादित हो, तो शिखर भी खराब नहीं होता, कड़ियां भी खराब नहीं होतीं, दीवार भी खराब नहीं होती; इसी प्रकार गृहपति! चित्त के खराब न होने पर काया, वाणी तथा मन के कर्म भी खराब नहीं होते। जिसके काया, वाणी तथा मन के कर्म खराब नहीं होते, उसका मरना भी अच्छा होता है, उसकी मृत्यु भी अच्छी होती है।"

## ९. हेतु सुत्त (प्रथम)

११२. "भिक्षुओ! कर्मों की उत्पत्ति के तीन हेतु (=निदान) हैं। कौन-से तीन?

"लोभ कर्मों की उत्पत्ति का हेतु है, द्वेष कर्मों की उत्पत्ति का हेतु है तथा मोह कर्मों की उत्पत्तिका हेतु है।

"भिक्षुओ, जिस कर्म के मूल में लोभ है, जो लोभ से उत्पन्न हुआ है, जिसका हेतु लोभ है, जिसकी उत्पत्ति लोभ से हुई है वह अकुशल कर्म है, वह सदोष कर्म है, उस कर्म का फल दुःख है, उस कर्म से कर्म का समुदय होता है, उस कर्म से कर्म का निरोध नहीं होता। भिक्षुओ, जिस कर्म के मूल में द्वेष है... जिसके मूल में मोह है, जो मोह से उत्पन्न हुआ है, जिसका हेतु मोह है, जिसकी उत्पत्ति मोह से हुई है वह अकुशल कर्म है, वह सदोष-कर्म है, उस कर्म का फल दुःख है, उस कर्म से कर्म का समुदय होता है, उस कर्म से कर्म का निरोध नहीं होता।

"भिक्षुओ, कर्मों की उत्पत्ति के ये तीन हेतु हैं।

"भिक्षुओ, कर्मों की उत्पत्ति के ये तीन हेतु हैं। कौन-से तीन?

"अलोभ कर्मों की उत्पत्ति का हेतु है, अद्वेष कर्मों की उत्पत्ति का हेतु है, अमोह कर्मों की उत्पत्ति का हेतु है।

"भिक्षुओ, जिस कर्म के मूल में अलोभ है, जो अलोभ से उत्पन्न हुआ है, जिसका हेतु अलोभ है, जिसकी उत्पत्ति अलोभ से हुई है वह कुशल कर्म है, वह निर्दोष कर्म है, उस कर्म का फल सुख है, उस कर्म से कर्म का निरोध होता है, उस कर्म से कर्म का समुदय नहीं होता। भिक्षुओ, जिस कर्म के मूल में अद्वेष है... जिस कर्म के मूल में अमोह है, जो अमोह से उत्पन्न हुआ है, जिसका हेतु अमोह है, जिसकी उत्पत्ति अमोह से हुई है, वह कुशल-कर्म है, वह निर्दोष-कर्म है, उस कर्म का फल सुख है, उस कर्म से कर्म का निरोध होता है, उस कर्म से कर्म का समुदय नहीं होता। भिक्षुओ! कर्मों की उत्पत्ति के ये तीन हेतु हैं।"

## १०. हेतु सुत्त (द्वितीय)

११३. "भिक्षुओ! कर्मों की उत्पत्ति के ये तीन हेतु हैं। कौन-से तीन?

"भिक्षुओ, भूतकाल के छंद-राग-स्थानीय (छंद-राग के जो कारण हैं उन) विषयों को लेकर छंद (=इच्छा) उत्पन्न होता है; भिक्षुओ! भविष्य के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छंद उत्पन्न होता है; भिक्षुओ, वर्तमान के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छंद उत्पन्न होता है।

"भिक्षुओ! भूतकाल के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छंद कैसे उत्पन्न होता है? भूतकाल के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर चित्त में वितर्क पैदा होते हैं, चित्त में विचार पैदा होते हैं। उनसे छंद की उत्पत्ति होती है। छंद (=इच्छा) उत्पन्न होने पर व्यक्ति उन विषयों से संयुक्त हो जाता है। भिक्षुओ! यह जो सराग चित्त है, इसे ही मैं संयोजन कहता हूं। इसी प्रकार भिक्षुओ! भूतकाल के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छंद उत्पन्न होता है।

"और भिक्षुओ! भविष्य काल के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छंद कैसे उत्पन्न होता है? भविष्य काल के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर चित्त में वितर्क पैदा होते हैं, विचार पैदा होते हैं। उनसे छंद की उत्पत्ति होती है, छंद उत्पन्न होने पर व्यक्ति उन विषयों से संयुक्त हो जाता है। भिक्षुओ! यह जो सराग चित्त है, इसे ही मैं संयोजन कहता हूं। इसी प्रकार भिक्षुओ! भविष्य काल के छंद-राग-स्थानीयविषयों को लेकर छंदउत्पन्न होता है।

"और भिक्षुओ! वर्तमान के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छंद कैसे उत्पन्न होता है? वर्तमान काल के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर चित्त में वितर्क पैदा होते हैं, विचार पैदा होते हैं। उनसे छंद की उत्पत्ति होती है। छंद उत्पन्न होने पर व्यक्ति उन विषयों से संयुक्त हो जाता है। भिक्षुओ! यह जो सराग चित्त है, इसे ही मैं संयोजन कहता हूं। इसी प्रकार भिक्षुओ, वर्तमान के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छंद उत्पन्न होता है। भिक्षुओ! कर्मों की उत्पत्ति के ये तीन हेतु हैं।

"भिक्षुओ! कर्मों की उत्पत्तिके ये तीन हेतु हैं। कौन-से तीन?

"भिक्षुओ, भूतकाल के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छंद उत्पन्न नहीं होता। भिक्षुओ! भविष्य के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छंद उत्पन्न नहीं होता। भिक्षुओ! वर्तमान के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छंद उत्पन्न नहीं होता।

"भिक्षुओ, भूतकाल के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छंद कैसे उत्पन्न नहीं होता?

"भिक्षुओ, वह भूतकाल के छंद-राग-स्थानीय विषयों का भावी फल अच्छी तरह जानता है, भावी फल जानकर उनसे पृथक होता है, पृथक होकर, चित्त से हटाकर, प्रज्ञा से बींध कर देखता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भूतकाल के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छंदउत्पन्न नहीं होता।

"और भिक्षुओ, भविष्य काल के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छंद कैसे उत्पन्न नहीं होता?

"भिक्षुओ, वह भविष्यकाल के छंद-राग-स्थानीय विषयों का भावी फल अच्छी तरह जानता है, भावी फल जानकर उनसे पृथक होता है, पृथक होकर, चित्त से हटा कर, प्रज्ञा से बींध कर देखता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भविष्यकाल के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छंदउत्पन्न नहीं होता।

"और भिक्षुओ, वर्तमान के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छंद कैसे उत्पन्न नहीं होता?

"भिक्षुओ, वह वर्तमान काल के छंद-राग-स्थानीय विषयों का भावी फल अच्छी तरह जानता है, भावी फल जानकर उनसे पृथक होता है, पृथक होकर, चित्त से हटाकर, प्रज्ञा से बींध कर देखता है। इस प्रकार भिक्षुओ! वर्तमान के छंद-राग-स्थानीय विषयों को लेकर छंद उत्पन्न नहीं होता।

"भिक्षुओ, कर्मों की उत्पत्ति के ये तीन हेतु हैं।"

* * * * *

## (१२) २. अपाय (नरक) वर्ग

### १. नरक गामी सुत्त

११४. "भिक्षुओ, इन (पाप-धर्मों) को न छोड़ने वाले तीन जन अपायगामी हैं, नरक गामी हैं। कौन-से तीन?

"जो अब्रह्मचारी होकर ब्रह्मचारी का स्वांग भरता है, जो परिशुद्ध ब्रह्मचर्य का आचरण करने वाले शुद्ध ब्रह्मचारी पर झूठा दोष लगाता है, तथा जिसका ऐसा मत होता है या ऐसी दृष्टि होती है कि, 'कामभोगों में दोष नहीं है', सो वह कामभोगों में निःसंकोच पड़ता है। भिक्षुओ, इन (पाप-धर्मों) को न छोड़ने वाले तीन जन अपायगामी हैं, नरक गामी हैं।"

### २. दुर्लभ सुत्त

११५. "भिक्षुओ, संसार में इन तीन का प्रादुर्भाव दुर्लभ है। कि नतीन का?

"भिक्षुओ, संसार में तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध का प्रादुर्भाव दुर्लभ है। संसार में तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म के उपदेष्टा का प्रादुर्भाव दुर्लभ है। संसार में कृतज्ञ, कृतवेदी का प्रादुर्भाव दुर्लभ है।

"भिक्षुओ, संसार में इन तीन का प्रादुर्भाव दुर्लभ है।"

### ३. अपरिमेय सुत्त

११६. "भिक्षुओ, संसार में तीन प्रकार के लोग हैं। कौन-से तीन?

"आसानी से मापे जा सकने योग्य, कठिनाई से मापे जा सकने योग्य, न मापे जा सकने योग्य।

"भिक्षुओ, आसानी से मापा जा सकने वाला व्यक्ति कैसा होता है?

"भिक्षुओ, एक व्यक्ति होता है उद्धत, मानी, चपल, मुखर, असंयतभाषी, मूढ़, असंप्रज्ञानी, असमाहित, भ्रांतचित्त, असंयत-इंद्रिय। भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति आसानी से मापा जा सकने वाला व्यक्ति कहलाता है।

"भिक्षुओ, कठिनाई से मापा जा सकने वाला व्यक्ति कैसा होता है?

"भिक्षुओ, एक व्यक्ति होता है अनुद्धत, अमानी, अचपल, अमुखर, संयत-भाषी, अमूढ़, संप्रज्ञानी, समाहित, अभ्रांत-चित्त, संयत-इंद्रिय। भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति कठिनाई से मापा जा सकने वाला व्यक्तिहोता है।

"भिक्षुओ, न मापे जा सकने वाला व्यक्ति कैसा होता है?

"यहां, भिक्षुओ, एक भिक्षु अर्हत होता है, क्षीणास्रव होता है। भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति न मापा जा सकने वाला व्यक्ति होता है। भिक्षुओ, संसार में ये तीन प्रकार के लोग हैं।"

## ४. आनेञ्ज सुत्त

११७. "भिक्षुओ, संसार में तीन तरह के लोग हैं? कौन-से तीन?

"यहां, भिक्षुओ, एक व्यक्ति सब रूप-संज्ञाओं को पार कर, प्रतिघ-संज्ञाओं कोअस्त कर,नानत्व-संज्ञा कोमन से निकाल,'आकाशअनंत है' करकेआकाशानन्त्यायतनको प्राप्त हो विहरता है। वह उसका आनंद लेता है, उसे चाहता है और उससे सुखी होता है। उस ध्यान में स्थित रहकर,उसी में लगा रहकर,उसी में प्रायः विहार करते रहकर,उस ध्यानावस्था को प्राप्त वह जब मरता है, तब वह आकाशानन्त्यायतन के देवताओं के साथ उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, आकाशानन्त्यायतनके देवताओं कीबीस हजार कल्पआयु होती है। सामान्य पृथग्जन आयु पर्यंत रहकर,जब तक उन देवताओं कीआयु है उसे बिताकर नरक कोभी जा सकता है, पशु-योनि में भी उत्पन्न हो सकता है, प्रेत-योनि में भी उत्पन्न हो सकता है। लेकिन जो भगवान का श्रावक है वह वहां आयु पर्यंत रहकर, जितनी उन देवताओं की आयु होती है, उतनी बिताकर उसी भव में परिनिर्वाण को प्राप्त हो जाता है। भिक्षुओ, गति तथा उत्पत्ति के बारे में यह विशेषता है, यह खास बात है, यह भेद है ज्ञानी आर्य श्रावक तथा अज्ञानी पृथग्जन में।

"फिर भिक्षुओ, एक व्यक्ति सब तरह से आकाशानन्त्यायतन को पार कर'विज्ञान अनंत है' करकेविज्ञानानन्त्यायतन को प्राप्त हो विहरता है। वह उसका आनंद लेता है, उसे चाहता है और उससे सुखी होता है। उस ध्यान में स्थित रहकर,उसी में लगा रहकर,उसी में प्रायः विहार करते रहकर,उस ध्यानावस्था कोप्राप्त वह जब मरता है तब वह विज्ञानानन्त्यायतन के देवताओं के साथ उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, विज्ञानानन्त्यायतन के देवताओं की चालीस हजार कल्पकी आयु होती है। सामान्य पृथग्जन आयु पर्यंत रहकर,जब तक उन देवताओं कीआयु है उसे बिताकर नरक कोभी जा सकता है, पशु-योनि में भी उत्पन्न हो सकता है, प्रेत-योनि में भी उत्पन्न हो सकता है। लेकिन जो

भगवान का श्रावक है वह वहां आयु पर्यंत रहकर जितनी उन देवताओं की आयु होती है उतनी बिताकर उसी भव में परिनिर्वाण को प्राप्त हो जाता है। भिक्षुओ, गति तथा उत्पत्ति के बारे में यह विशेषता है, यह खास बात है, यह भेद है, ज्ञानी आर्य श्रावक तथा अज्ञानी पृथग्जन में।

"फिर भिक्षुओ, एक व्यक्ति सब तरह से विज्ञानानन्त्यायतन को पार कर 'कुछ नहीं है' करके आकिञ्चन्यायतन को प्राप्त कर विहार करता है। वह उसका आनंद लेता है, उसे चाहता है और उससे सुखी होता है। उस ध्यान में स्थित रह कर, उसी में लगा रहकर, उसी में प्रायः विहार करते रहकर, उस ध्यानावस्था को प्राप्त वह जब मरता है तब वह आकिञ्चन्यायतन के देवताओं के साथ उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, आकिञ्चन्यायतन के देवताओं की साठ हजार कल्प की आयु होती है। सामान्य पृथग्जन आयु पर्यंत रहकर, जब तक उन देवताओं की आयु है, उसे बिताकर नरक को भी जा सकता है, पशु-योनि में भी उत्पन्न हो सकता है, प्रेत-योनि में भी उत्पन्न हो सकता है। लेकिन जो भगवान का श्रावक है वह वहां आयु पर्यंत रहकर, जितनी उन देवताओं की आयु होती है उतनी बिताकर उसी भव में परिनिर्वाण को प्राप्त हो जाता है। भिक्षुओ, गति तथा उत्पत्ति के बारे में यह विशेषता है, यह खास बात है, यह भेद है ज्ञानी आर्य श्रावक तथा अज्ञानी पृथग्जन में।

"भिक्षुओ, संसार में ये तीन प्रकार के लोग हैं।"

### ५. असफलता-सफलतां सुत्त

११८. "भिक्षुओ, ये तीन असफलताएं हैं। कौन-सी तीन?

"शील पालन में असफल होना, चित्त (समाधि) की प्राप्ति में असफल होना, दृष्टि (प्रज्ञा) के अधिगम में असफल होना।

"भिक्षुओ, शील पालन में असफल होना किसे कहते हैं?

"भिक्षुओ, एक व्यक्ति प्राणी-हिंसा करता है, चोरी करता है, कामभोग संबंधी मिथ्याचार करता है, झूठ बोलता है, चुगली खाता है, कठोर बोलता है, व्यर्थ बोलता है। भिक्षुओ, इसे शील पालन में असफल होना कहते हैं।

---

१ पालि **'विपत्ति'** हिन्दी **'विपत्ति'** का पर्याय नहीं है। हिन्दी **'विपत्ति'** का अर्थ 'संकट' 'नाश' 'आफत' आदि है। पालि **'विपत्ति'** का अर्थ 'असफलता' है। पालि **'सील विपत्ति'** का अर्थ 'शील पालन में असफल होना' है। उसी तरह पालि 'सम्पदा' का अर्थ हिन्दी 'संपदा' नहीं है। हिन्दी **'संपदा'** का अर्थ 'धनसंपत्ति' 'ऐश्वर्य' आदि है। पालि **'सम्पदा'** का अर्थ 'सफलता' है। पालि **'सील सम्पदा'** का अर्थ 'शील पालन में सफल होना' है।

**'विपत्ति'** तथा **'सम्पदा'** पालि वाङ्मय में पारिभाषिक शब्द हैं।

"भिक्षुओ, चित्त (समाधि) की प्राप्ति में असफल होना किसे कहते हैं?

"भिक्षुओ, एक व्यक्ति लोभी होता है, क्रोधी होता है। भिक्षुओ, इसे चित्त (समाधि) की प्राप्ति में असफल होना कहते हैं।

"भिक्षुओ, दृष्टि (प्रज्ञा) के अधिगम में असफल होना किसे कहते हैं?

"भिक्षुओ, एक व्यक्ति मिथ्या-दृष्टि वाला होता है, विपरीत-मति (विपरीत दर्शन वाला)-दान का, यज्ञ का, आहुति का, सुकृत-दुष्कृत कर्मों का फल नहीं, यह लोक नहीं, परलोक नहीं, माता नहीं, पिता नहीं, च्युत होकर उत्पन्न होने वाले प्राणी नहीं, संसार में कोई सन्मार्ग-गामी, सुपथ-गामी श्रमण-ब्राह्मण नहीं जो इस लोक तथा परलोक को स्वयं जानकर साक्षात कर उसकी बात करते हों – वह ऐसा मानने वाला होता है। भिक्षुओ, इसे दृष्टि (प्रज्ञा) के अधिगम में असफल होना कहते हैं।

"भिक्षुओ, शील पालन में असफल होने के कारण प्राणी शरीर के न रहने पर, मरने के बाद अपायगति, दुर्गति में पड़कर नरक में पैदा होते हैं, अथवा चित्त (समाधि) की प्राप्ति में असफल होने के कारण प्राणी शरीर के न रहने पर, मरने के बाद अपायगति, दुर्गति में पड़कर नरक में पैदा होते हैं अथवा दृष्टि (प्रज्ञा) के अधिगम में असफल होने के कारण प्राणी, शरीर के न रहने पर, मरने के बाद अपायगति, दुर्गति में पड़कर नरक में पैदा होते हैं। भिक्षुओ, ये तीन असफलताएं हैं।

"भिक्षुओ, ये तीन सफलताएं हैं? कौन-सी तीन?

"शील पालन में सफल होना, चित्त (समाधि) की प्राप्ति में सफल होना तथा दृष्टि (प्रज्ञा) के अधिगम में सफल होना।

"भिक्षुओ, शील पालन में सफल होना क्या है?

"यहां, भिक्षुओ! एक व्यक्ति प्राणी-हिंसा से विरत होता है, चोरी से विरत होता है, कामभोग संबंधी मिथ्याचार से विरत होता है, झूठ बोलने से विरत होता है, चुगली खाने से विरत होता है, कठोर बोलने से विरत रहता है तथा व्यर्थ बोलने से विरत रहता है। भिक्षुओ, इसे शील पालन में सफल कहते हैं।

"और भिक्षुओ! चित्त (समाधि) की प्राप्ति में सफल होना क्या है?

"यहां, भिक्षुओ! एक व्यक्ति अलोभी होता है, अक्रोधी होता है। भिक्षुओ, इसे चित्त (समाधि) की प्राप्ति में सफल होना कहते हैं।

"और भिक्षुओ! दृष्टि (प्रज्ञा) के अधिगम में सफल होना किसे कहते हैं?

"यहां, भिक्षुओ! एक व्यक्ति सम्यक-दृष्टि वाला होता है, सीधी-समझ वाला – दान का, यज्ञ का, आहुति, सुकृत-दुष्कृत कर्मों का फल-विपाक है, यह

लोक है, परलोक है, माता है, पिता है, च्युत होकर उत्पन्न होने वाले प्राणी हैं, लोक में सन्मार्ग-गामी, सुपथ-गामी, श्रमण-ब्राह्मण हैं जो इस लोक तथा परलोक को स्वयं जानकर, साक्षात कर उनकी बात करते हैं –वह ऐसा मानता है। भिक्षुओ! इसे दृष्टि (प्रज्ञा) के अधिगम में सफल होना कहते हैं।

"भिक्षुओ, शील पालन में सफल होने के कारण प्राणी शरीर के न रहने पर, मरने के बाद सुगति को प्राप्त हो स्वर्गलोक में जन्म ग्रहण करते हैं या भिक्षुओ, चित्त (समाधि) की प्राप्ति में सफल होने के कारण प्राणी शरीर छूटने पर, मरने के बाद सुगति को प्राप्त हो स्वर्गलोक में जन्म ग्रहण करते हैं अथवा भिक्षुओ, दृष्टि (प्रज्ञा) के अधिगम में सफल होने के कारण प्राणी शरीर छूटने पर, मरने के बाद सुगति को प्राप्त हो स्वर्गलोक में जन्म ग्रहण करते हैं।

"भिक्षुओ, ये तीन सफलताएं हैं।"

## ६. अनुलोम मार्ग सुत्त

११९. "भिक्षुओ, तीन असफलताएं हैं। कौन-सी तीन?

"शील पालन में असफल होना, चित्त (समाधि) की प्राप्ति में असफल होना, दृष्टि (प्रज्ञा) के अधिगम में असफल होना... (पूर्वानुसार)

"भिक्षुओ, जैसे ऊपर फेंका हुआ पासा जहां-जहां भी गिरता है, निश्चित ही ठीक गिरकर प्रतिष्ठित हो जाता है, इसी प्रकार भिक्षुओ, शील पालन में असफल होने के कारण प्राणी... में पैदा होते हैं (नरक में गिरना निश्चित है), अथवा चित्त (समाधि) की प्राप्ति में असफल होने के कारण... पैदा होते हैं अथवा दृष्टि (प्रज्ञा) के अधिगम में असफल होने के कारण... पैदा होते हैं। भिक्षुओ, ये तीन असफलताएं हैं।

"भिक्षुओ, ये तीन सफलताएं हैं? कौन-सी तीन?

"शील पालन में सफल होना, चित्त (समाधि) की प्राप्ति में सफल होना, दृष्टि (प्रज्ञा) के अधिगम में सफल होना।

"भिक्षुओ, जैसे ऊपर फेंका हुआ पासा जहां-जहां भी गिरता है, ठीक ही गिरता है, इसी प्रकार भिक्षुओ, शील पालन में सफल होने के कारण प्राणी... जन्म ग्रहण करते हैं, अथवा चित्त (समाधि) की प्राप्ति में सफल होने के कारण प्राणी... जन्म ग्रहण करते हैं, अथवा दृष्टि (प्रज्ञा) के अधिगम में सफल होने के कारण प्राणी... जन्म ग्रहण करते हैं। भिक्षुओ, ये तीन सफलताएं हैं।"

## ७. कर्मांत सुत्त

१२०. "भिक्षुओ, ये तीन असफलताएं हैं। कौन-सी तीन?

"कर्मांत (सम्यक कर्म) करने में असफल होना, आजीव (सम्यक आजीविका) प्राप्त करने में असफल होना, दृष्टि (सम्यक दृष्टि) के अधिगम में असफल होना।

"भिक्षुओ, कर्मांत (सम्यक कर्म) करने में असफल होना किसे कहते हैं?

"यहां, भिक्षुओ, एक व्यक्ति प्राणी-हिंसा करता है... व्यर्थ बोलता है। भिक्षुओ, इसे कर्मांत करने में असफल होना कहते हैं।

"और भिक्षुओ, आजीव प्राप्त करने में असफल होना किसे कहते हैं?

"यहां, भिक्षुओ, एक व्यक्ति मिथ्या-जीवी होता है, मिथ्या-आजीविका से जीविका चलाता है। भिक्षुओ, इसे आजीव प्राप्त करने में असफल होना कहते हैं।

"और भिक्षुओ, दृष्टि के अधिगम में असफल होना किसे कहते हैं?

"यहां, भिक्षुओ, एक व्यक्ति मिथ्या-दृष्टि वाला, विपरीत-मति वाला होता है – दान का, यज्ञ का... जो इस लोक तथा परलोक को स्वयं जानकर, साक्षात कर उनकी बात करते हैं – ऐसा मानने वाला होता है। भिक्षुओ! इसे दृष्टि के अधिगम में असफल होना कहते हैं। भिक्षुओ, ये तीन असफलताएं हैं।

"भिक्षुओ, ये तीन सफलताएं हैं। कौन-सी तीन?

"कर्मांत करने में सफल होना, आजीव की प्राप्ति में सफल होना, दृष्टि के अधिगम में सफल होना।

"भिक्षुओ, कर्मांत करने में सफल होना क्या है?

"यहां, भिक्षुओ, एक व्यक्ति प्राणी-हिंसा से विरत रहता है...व्यर्थ बोलने से विरत रहता है। भिक्षुओ, इसे कर्मांत करने में सफल होना कहते हैं।

"और भिक्षुओ, आजीव की प्राप्ति में सफल होना किसे कहते हैं?

"यहां, भिक्षुओ, एक व्यक्ति सम्यक जीवी होता है, वह सम्यक आजीविका से जीविका चलाता है। भिक्षुओ, इसे आजीव की प्राप्ति में सफल होना कहते हैं।

"और भिक्षुओ, दृष्टि के अधिगम में सफल होना किसे कहते हैं?

"भिक्षुओ, एक व्यक्ति सम्यक-दृष्टि वाला होता है... अविपरीत-दर्शी – दान का... जो इस लोक तथा परलोक को स्वयं जानकर, साक्षात कर उनकी बात करते हैं – ऐसा मानने वाला होता है। भिक्षुओ, इसे दृष्टि के अधिगम में सफल होना कहते हैं। भिक्षुओ, ये तीन सफलताएं हैं।"

## ८. शुचिता सुत्त (प्रथम)

१२१. "भिक्षुओ, ये तीन शुचिताएं हैं। कौन-सी तीन?

"काया की शुचिता, वाणी की शुचिता, मन की शुचिता।

"भिक्षुओ, काया की शुचिता किसे कहते हैं?

"यहां, भिक्षुओ, एक व्यक्ति प्राणी-हिंसा से विरत रहता है, चोरी से विरत रहता है। कामभोग संबंधी मिथ्याचार से विरत रहता है। भिक्षुओ, यह काया की शुचिता है।

"और भिक्षुओ, वाणी की शुचिता क्या है?

"यहां, भिक्षुओ, एक व्यक्ति झूठ बोलने से विरत रहता है... चुगली खाने से विरत रहता है, कठोर बोलने से विरत रहता है तथा व्यर्थ बोलने से विरत रहता है। भिक्षुओ, इसे वाणी की शुचिता कहते हैं।

"और भिक्षुओ, मन की शुचिता क्या है?

"यहां, भिक्षुओ, एक व्यक्ति निर्लोभी होता है, अक्रोधी होता है तथा सम्यक-दृष्टिवाला होता है। भिक्षुओ, यह मन की शुचिता है। भिक्षुओ, ये तीन शुचिताएं हैं।"

## ९. शुचिता सुत्त (द्वितीय)

१२२. "भिक्षुओ, ये तीन शुचिताएं हैं। कौन-सी तीन?

"काया की शुचिता, वाणी की शुचिता, मन की शुचिता।

"और भिक्षुओ, काया की शुचिता क्या है?

"यहां, भिक्षुओ, भिक्षु प्राणी-हिंसा से विरत होता है, चोरी से विरत होता है, अब्रह्मचर्य से विरत होता है। भिक्षुओ, यह काया की शुचिता है।

"और भिक्षुओ, वाणी की शुचिता क्या है?

"यहां, भिक्षुओ, भिक्षु झूठ से विरत होता है, चुगली खाने से विरत होता है, कठोर बोलने से विरत होता है तथा व्यर्थ बोलने से विरत होता है। भिक्षुओ, यह वाणी की शुचिता है।

"और भिक्षुओ, मन की शुचिता क्या है?

"यहां, भिक्षुओ, भिक्षु अपने भीतर कामच्छंद (कामुकता) के विद्यमान होने पर 'मेरे भीतर कामच्छंद है', यह भली प्रकार जानता है। उसमें कामच्छंद नहीं होने पर 'मेरे भीतर कामच्छंद नहीं है', यह भली प्रकार जानता है। जिस तरह अनुत्पन्न कामच्छंद की उत्पत्ति होती है –उसे भली प्रकार जानता है। जिस

तरह उत्पन्न कामच्छंद का प्रहाण होता है – उसे भली प्रकार जानता है। जिस तरह प्रहीण कामच्छंद की भविष्य मे उत्पत्ति नहीं होती है – उसे भली प्रकार जानता है।

"अपने भीतर व्यापाद (द्वेष) विद्यमान होने पर 'मेरे भीतर द्वेष है', यह भली प्रकार जानता है। भीतर द्वेष नहीं होने पर 'मेरे भीतर द्वेष नहीं है', यह भली प्रकार जानता है। जिस तरह अनुत्पन्न द्वेष की उत्पत्ति होती है –उसे भली प्रकार जानता है। जिस तरह उत्पन्न द्वेष का प्रहाण होता है –उसे भली प्रकार जानता है। जिस तरह प्रहीण हुआ द्वेष फिर नहीं उत्पन्न होता है –उसे भली प्रकार जानता है।

"अपने भीतर आलस्य (=स्त्यान-मृद्ध) विद्यमान होने पर 'मेरे भीतर आलस्य है', यह भली प्रकार जानता है। उसमें आलस्य नहीं होने पर 'मेरे भीतर आलस्य नहीं है', यह भली प्रकार जानता है। जिस तरह अनुत्पन्न आलस्य की उत्पत्ति होती है –उसे भली प्रकार जानता है। जिस तरह उत्पन्न आलस्य का प्रहाण होता है –उसे भली प्रकार जानता है। जिस तरह प्रहीण हुआ आलस्य भविष्य में उत्पन्न नहीं होता है – उसे भली प्रकार जानता है।

"अपने भीतर उद्धतपन तथा पश्चात्ताप (औद्धत्य-कौकृत्य)विद्यमान होने पर 'मेरे भीतर उद्धतपन तथा पश्चात्ताप है', यह भली प्रकार जानता है। उसमे उद्धतपन तथा पश्चात्ताप नहीं होने पर 'उद्धतपन तथा पश्चात्ताप नहीं है' – यह भली प्रकार जानता है। जिस तरह अनुत्पन्न उद्धतपन तथा पश्चात्ताप की उत्पत्ति होती है –उसे भली प्रकार जानता है। जिस तरह उत्पन्न उद्धतपन तथा पश्चात्ताप का प्रहाण होता है –उसे भली प्रकार जानता है। जिस तरह प्रहीण हुआ उद्धतपन तथा पश्चात्ताप भविष्य में उत्पन्न नहीं होता है – उसे भली प्रकार जानता है।

"अपने भीतर संशय (विचिकित्सा) विद्यमान होने पर 'मेरे भीतर संशय है', यह भली प्रकार जानता है। भीतर संशय नहीं होने पर 'मेरे भीतर संशय नहीं है', यह भली प्रकार जानता है। जिस तरह अनुत्पन्न संशय की उत्पत्ति होती है –उसे भली प्रकार जानता है। जिस तरह उत्पन्न संशय का प्रहाण होता है –उसे भली प्रकार जानता है। जिस तरह प्रहीण संशय भविष्य में उत्पन्न नहीं होता है – उसे भली प्रकार जानता है। भिक्षुओ, यह मन की शुचिता है। भिक्षुओ, ये तीन शुचिताएं हैं।"

**"कायसुचिं वचीसुचिं, चेतोसुचिं अनासवं।**
**सुचिं सोचेय्यसम्पन्नं, आहु निन्हातपापक"न्ति॥**

["जिसका काय (-कर्म) पवित्र है, वाणी पवित्र है तथा मन पवित्र है ऐसे पवित्र शुचि-भाव-संपन्न अनास्रव को पाप से स्वच्छ हुआ कहते हैं।"]

### १०. मौन सुत्त

१२३. "भिक्षुओ 'मौन' तीन प्रकार का होता है। कौन-से तीन प्रकार का? काया का मौन, वाणी का मौन, मन का मौन। भिक्षुओ, काया का 'मौन' कैसा होता है?

"भिक्षुओ, भिक्षु प्राणी-हिंसा से विरत होता है, चोरी से विरत होता है, कामभोग संबंधी मिथ्याचार से विरत होता है। भिक्षुओ, यह काया का 'मौन' कहलाता है।

"और भिक्षुओ, वाणी का मौन कैसा होता है?

"यहां, भिक्षुओ, भिक्षु झूठ बोलने से विरत होता है, चुगली खाने से विरत होता है, कठोर बोलने से विरत होता है, व्यर्थ बोलने से विरत होता है। भिक्षुओ, यह वाणी का 'मौन' कहलाता है।

"और भिक्षुओ, मन का 'मौन' कैसा होता है?

"यहां, भिक्षुओ, भिक्षु आस्रवों का क्षय कर, अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्ति को इसी जीवन में अपने आप जानकर, साक्षात कर, प्राप्तकर विहार करता है। भिक्षुओ, यह मन का 'मौन' कहलाता है।

"भिक्षुओ, ये तीन 'मौन' हैं।"

**"कायमुनिं वचीमुनिं, चेतोमुनिं अनासवं।**
**मुनिं मोनेय्यसम्पन्नं, आहु सब्बप्पहायिन"न्ति॥**

["जिसकी काया 'मौन' है, जिसकी वाणी 'मौन' है, जिसका चित्त 'मौन' है – ऐसे मौन-युक्त, सर्वत्यागी अनास्रव जन को 'मुनि' कहते हैं।"]

* * * * *

## (१३) ३. कुसिनार वर्ग

### १. कुसिनार सुत्त

१२४. एक समय भगवान कुशीनारा में बलिहरण नाम के वन-खंड में विहार करते थे। वहां भगवान ने भिक्षुओं को संबोधित किया –

"भिक्षुओ!"

"भदंत!" कहकरउन भिक्षुओं ने भगवान को प्रतिवचन दिया। भगवान ने यह कहा –

"भिक्षुओ, कोईएक भिक्षु किसीएक गांव या निगम के आश्रय में रहकर विहार करताहै। कोईगृहस्थ या गृहस्थ-पुत्र आकरउसे अगले दिन के भोजन के लिए आमंत्रित करताहै। भिक्षुओ! इच्छा करनेवाला भिक्षु उसे स्वीकारकरलेता है। उस रात के बीत जाने पर, पूर्वाह्न समय होने पर, (चीवर) पहन, पात्र-चीवर ले, वह उस गृहस्थ वा गृहस्थ-पुत्र के घर पहुँचता है। जाकर बिछे आसन पर बैठता है। वह गृहपति वा गृहपति-पुत्र उस भिक्षु को बढ़िया खाना, बढ़िया भोजन अपने हाथ से परोसता है। उसके मन में होता है –अच्छा है यह गृहपति वा गृहपति-पुत्र बढ़िया खाना, बढ़िया भोजन मुझे अपने हाथ से परोसता है। उसके मन में यह भी होता है –क्या अच्छा हो यदि यह गृहपति वा गृहपति-पुत्र भविष्य में भी बढ़िया खाना, बढ़िया भोजन मुझे अपने हाथ से परोसे। उस भोजन में आसक्त होकर,मूर्च्छित होकर,वश में होकर,आदीनव (खतरा, बुरा परिणाम) न देखता हुआ, उससे विमुक्त होने की प्रज्ञा से विहीन हो वह उसे ग्रहण करताहै। उसके मन में कामि-वितर्कभी उठते हैं, व्यापाद-वितर्क भी उठते हैं तथा विहिंसा-वितर्क भी उठते हैं। भिक्षुओ, इस प्रकारके भिक्षु को दिये गये दान कामैं 'महान-फल' नहीं कहता।यह किसलिए? क्योंकि, भिक्षुओ, वह भिक्षु 'प्रमत्त' (प्रमादी) रहकरविहार करताहै।

"इसी प्रसंग में, भिक्षुओ, कोईएक भिक्षु किसीएक गांव या निगम के आश्रय में रहकर विहार करता है। कोई गृहस्थ या गृहस्थ-पुत्र आकर उसे अगले दिन के भोजन के लिए आमंत्रित करता है। भिक्षुओ! इच्छा करनेवाला भिक्षु उसे स्वीकारकर लेता है। उस रात के बीत जाने पर, पूर्वाह्न समय होने पर, (चीवर) पहन, पात्र-चीवर ले वह उस गृहस्थ वा गृहस्थ-पुत्र के घर पहुँचता है। जाकर बिछे आसन पर बैठता है। गृहपति वा गृहपति-पुत्र उस भिक्षु को बढ़िया खाना, बढ़िया भोजन अपने हाथ से परोसता है। उसके मन में यह नहीं होता – अच्छा है यह गृहपति या गृहपति-पुत्र बढ़िया-खाना, बढ़िया-भोजन मुझे अपने हाथ से परोसता है। उसके मन में यह भी नहीं होता है – क्या अच्छा हो यदि यह गृहपति या गृहपति-पुत्र भविष्य में भी बढ़िया-खाना, बढ़िया-भोजन मुझे अपने हाथ से परोसे। उस भोजन में आसक्त न हो, अमूर्च्छित रह कर, वशीभूत न हो, आदीनव देखता हुआ, उससे विमुक्त होने की प्रज्ञा से युक्त हो वह उसे ग्रहण करताहै। उसके मन में निष्क्रमण-वितर्क उठते हैं, अद्वेष-संबंधी वितर्क उठते हैं, अविहिंसा-संबंधी

वितर्क उठते हैं। भिक्षुओ, इस प्रकार के भिक्षु को दिये गये दान का मैं 'महान फल' कहता हूं। यह किसलिए? भिक्षुओ, भिक्षु अप्रमादी रह विहार करता है।"

## २. कलह सुत्त

१२५. "भिक्षुओ, जिस दिशा में भिक्षु आपस में झगड़ते हैं, कलह करते हैं, विवाद करते हैं, परस्पर एक दूसरे को शब्दशूल से बींधते हुए विचरते हैं, भिक्षुओ, उस दिशा में जाने की तो बात ही क्या, उस दिशा की ओर ध्यान देने से भी मुझे सुख नहीं होता। उनके बारे में मेरे मन में यह निश्चय हो जाता है कि उन आयुष्मानों ने तीन बातों को छोड़ दिया होगा और दूसरी तीन बातों को ही बढ़ाया होगा।

"किन तीन बातों को छोड़ दिया होगा? नैष्क्रम्य-वितर्क, अव्यापाद-वितर्क, अविहिंसा-वितर्क। इन तीन बातों को छोड़ दिया होगा।

"किन तीन बातों को ही बढ़ाया होगा?

"काम-वितर्क, व्यापाद-वितर्क, विहिंसा-वितर्क। इन तीन बातों को ही बढ़ाया होगा।

"भिक्षुओ, जिस दिशा में भिक्षु आपस में झगड़ते हैं, कलह करते हैं, विवाद करते हैं, परस्पर एक दूसरे को शब्दशूल से बींधते हुए विचरते हैं, भिक्षुओ, उस दिशा में जाने की तो बात ही क्या, उस दिशा की ओर ध्यान देने से भी मुझे सुख नहीं होता। उनके बारे में मेरे मन में यह निश्चय हो जाता है कि उन आयुष्मानों ने इन तीन बातों को छोड़ दिया होगा और इन तीन बातों को ही बढ़ाया होगा।

"भिक्षुओ, जिस दिशा में भिक्षु समग्र-भाव से, प्रमुदित मन से, परस्पर विवाद न करते हुए, दूध-पानी बने हुए, एक दूसरे को प्रेम की दृष्टि से सम्यक प्रकार से देखते हुए विचरते हैं, भिक्षुओ, उस दिशा की ओर ध्यान देने की तो बात ही क्या, उस दिशा की ओर जाने में मुझे सुख मिलता है। उनके बारे में मेरे मन में निश्चय हो जाता है कि उन आयुष्मानों ने तीन बातों को छोड़ दिया होगा और तीन बातों को ही बढ़ाया होगा।

"किन तीन बातों को छोड़ दिया होगा?

"काम-वितर्क, व्यापाद-वितर्क, विहिंसा-वितर्क। इन तीन बातों को छोड़ दिया होगा।

"किन तीन बातों को बढ़ाया होगा? नैष्क्रम्य-वितर्क ...बढ़ाया होगा। भिक्षुओ, जिस दिशा में भिक्षु समग्र-भाव से... सुख मिलता है। उनके बारे में... बढ़ाया होगा।"

### ३. गोतमक-चेतिय सुत्त

१२६. एक समय भगवान वैशाली के गोतमक चैत्य में विहार करते थे। वहां भगवान ने भिक्षुओं को संबोधित किया –

"भिक्षुओ!"

"भदंत!" कहकर भिक्षुओं ने भगवान को प्रतिवचन दिया। भगवान ने यह कहा –

"भिक्षुओ, मैं पूरी तरह जानकर धर्म का उपदेश करता हूं, बिना पूरी तरह जाने नहीं; भिक्षुओ, मैं निदान (=हेतु)-सहित धर्मों का उपदेश देता हूं, बिना निदान के नहीं; भिक्षुओ, मैं प्रातिहार्य के साथ धर्मों का उपदेश करता हूं, बिना प्रातिहार्य के नहीं। जब मैं पूरी तरह जानकर धर्म का उपदेश करता हूं, बिना पूरी तरह जाने नहीं; जब मैं निदान-सहित धर्म का उपदेश करता हूं, बिना निदान के नहीं; जब मैं प्रातिहार्य के साथ धर्म का उपदेश करता हूं, बिना प्रातिहार्य के नहीं तब मेरे उपदेश के अनुसार आचरण होना ही चाहिए, मेरा अनुशासन माना ही जाना चाहिए। भिक्षुओ, तुम्हारी संतुष्टि के लिए, तुम्हारे संतोष के लिए, तुम्हारी प्रसन्नता के लिए यह पर्याप्त है कि –'भगवान सम्यक संबुद्ध हैं, धर्म सु-आख्यात (भली प्रकार कहा गया) है, संघ सुमार्ग-गामी है।'" भगवान ने यह कहा।

संतुष्ट हुए उन भिक्षुओं ने भगवान के भाषण का अभिनंदन किया। इस 'व्याख्या' के कहे जाते समय सहस्री लोकधातु कांप उठी।

### ४. भरण्डुकालाम सुत्त

१२७. एक समय भगवान कोशल जनपद में चारिका करते हुए कपिलवस्तु पहुँचे। महानाम शाक्य ने सुना कि भगवान कपिलवस्तु में पहुँच गये हैं। तब महानाम शाक्य भगवान के पास गया। पास जाकर भगवान को अभिवादन कर एक ओर खड़ा हो गया। एक ओर खड़े महानाम शाक्य को भगवान ने यह कहा –

"महानाम! कपिलवस्तु जा। ऐसा निवासस्थान खोज जहां हम आज एक रात रहें।"

"भंते! अच्छा।" कहकर महानाम शाक्य ने भगवान को प्रतिवचन दिया और कपिलवस्तु में प्रवेश कर उसने सारी कपिलवस्तु में निवासस्थान खोजा। उसे कपिलवस्तु में कोई ऐसा निवासस्थान नहीं दिखाई दिया जहां भगवान एक रात रह सकें। तब महानाम शाक्य भगवान के पास गया। पास जाकर उसने भगवान से कहा –

"भंते! कपिलवस्तु में वैसा निवासस्थान नहीं है जहां भगवान आज एक रात रहें। भंते! यह भरण्डु कालाम है भगवान का पुराना सह-पाठी। आज रात भगवान उसके आश्रम में रहें।"

"महानाम! जा। शयनासन बिछा।"

"भंते! अच्छा" कह, महानाम शाक्य भगवान की बात सुन भरण्डु कालाम के आश्रम गया। जाकर शयनासन तैयार कर, पैर धोने के लिए पानी रखकर, भगवान के पास गया। जाकर भगवानसे बोला –

"भंते! शयनासन बिछा है। पैर धोने के लिए पानी रखा है। अब भंते! भगवान जो इस समय करना हो करें।"

तब भगवान भरण्डु कालाम के आश्रम गये। पहुँचकर बिछे आसन पर बैठे। बैठकर पांव धोये। उस समय महानाम शाक्य के मन में यह विचार आया –

"आज भगवान का सत्संग करने का समय नहीं है। भगवान थके हैं। कल मैं भगवान की सेवा में आऊंगा।" वह भगवान को प्रणाम कर, प्रदक्षिणा करके चला गया।

अब महानाम शाक्य उस रात्रि के बीतने पर भगवान के पास गया। पास जाकर भगवान को अभिवादन कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे महानाम शाक्य को भगवान ने यह कहा –

"महानाम! इस संसार में तीन प्रकार के शास्ता हैं। कौन-से तीन प्रकार के ?"

"महानाम! एक शास्ता कामनाओं का पूर्ण ज्ञान से (यथार्थतः) प्रज्ञापन करते हैं, रूप का नहीं, वेदनाओं का नहीं; महानाम! एक दूसरे शास्ता कामनाओं का पूर्ण ज्ञान से प्रज्ञापन करते हैं, रूप का पूर्ण ज्ञान से प्रज्ञापन करते हैं, वेदनाओं का नहीं; महानाम! एक तीसरे शास्ता कामनाओं का पूर्ण ज्ञान से प्रज्ञापन करते हैं, रूप का पूर्ण ज्ञान से प्रज्ञापन करते हैं और वेदनाओं का पूर्ण ज्ञान से प्रज्ञापन करते हैं। महानाम! संसार में ये तीन प्रकार के शास्ता हैं। महानाम! इन तीन प्रकार के शास्ताओं का एक ही निष्कर्ष है वा भिन्न-भिन्न निष्कर्ष है ?"

ऐसा कहे जाने पर भरण्डु कालाम ने महानाम शाक्य को यह कहा –

"महानाम! कह कि एक ही निष्कर्ष है।"

ऐसा कहने पर भगवान ने महानाम शाक्य को कहा –

"महानाम! कह अनेक।"

दूसरी बार भी भरण्डु कालाम ने महानाम शाक्य को यह कहा – "महानाम! कह एक।" दूसरी बार भी भगवान ने महानाम शाक्य को कहा – "महानाम! कह अनेक।" तीसरी बार भी भरण्डु कालाम ने महानाम शाक्य को कहा –"महानाम! कह एक।" तीसरी बार भी भगवान ने महानाम शाक्य को कहा – "महानाम! कह अनेक।"

तब भरण्डु कालाम के मन में यह हुआ –

"प्रतापी महानाम शाक्य के सामने श्रमण गौतम ने मेरा तीन बार खंडन कर दिया। मेरे लिए अच्छा है कि मैं कपिलवस्तु से निकल भागूं।"

तब भरण्डु कालाम कपिलवस्तु से चला गया। कपिलवस्तु से जो गया, सो गया। फिर लौटकर नहीं आया।

### ५. हत्थक सुत्त

१२८. एक समय भगवान श्रावस्ती में अनाथपिण्डिक के आराम में विहार करते थे। उस समय अभिरूप हत्थक-देवपुत्र रात के बीतते सारे के सारे जेतवन को प्रकाशित कर भगवान के पास गया। पास जाकर 'भगवान के सामने खड़ा होऊंगा' सोच लड़खड़ाता था, इधर-उधर झुकता था किंतु खड़ा नहीं रह सकता था। जैसे घी या तेल को यदि बालू पर डाला जाए तो वह नीचे चला जाता है, ऊपर नहीं रहता, उसी प्रकार हत्थक देवपुत्र 'भगवान के सामने खड़ा होऊंगा' सोच लड़खड़ाता था, इधर-उधर झुकता था किंतु खड़ा नहीं रह सकता था।

तब भगवान ने हत्थक-देवपुत्र को यह कहा –"हत्थक! तू स्थूल रूप बना"। "भंते! अच्छा" कह हत्थक-देवपुत्र भगवान की बात सुन स्थूल रूप बनाकर भगवान को प्रणाम कर एक ओर खड़ा हुआ। एक ओर खड़े हुए हत्थक-देवपुत्र को भगवान ने यह कहा –

"हत्थक! मनुष्य रहते समय जो-जो बातें होती थीं, वे इस समय भी प्रवर्तित होती हैं?

"भंते भगवान! जो बातें पहले मनुष्य रहते समय होती थीं, वे बातें अब भी प्रवर्तित होती हैं और जो बातें पहले मनुष्य रहते नहीं होती थीं, वे भी अब प्रवर्तित होती हैं। जैसे भंते भगवान इस समय भिक्षुओं से, भिक्षुणियों से, उपासकों से, उपासिकाओं से, राजाओं से, राजमहामात्यों से, तैर्थिकों से, तैर्थिक-श्रावकोंसे परिवृत होकर विहार करते हैं; उसी प्रकार भंते, मैं भी

देवपुत्रों से परिवृत हो विचरण करता हूं। भंते! 'हत्थक-देवपुत्र से धर्म सुनेंगे' सोच दूर-दूर से देवपुत्र आते हैं।

"भंते! मैं तीन बातों से अतृप्त रहकर, असंतुष्ट रहकर ही मर गया। किन तीन से? भंते! मैं भगवान के दर्शन से अतृप्त रहकर ही मर गया। सद्धर्म श्रवण में भी मैं अतृप्त रहकर ही मर गया। भंते! मैं संघ की सेवा करने के विषय में भी अतृप्त रहकर ही मर गया।

"भंते! मैं इन तीन बातों के विषय में अतृप्त रहकर, असंतुष्ट रहकर ही मर गया।"

**"नाहं भगवतो दस्सनस्स, तित्तिमज्झगा कुदाचनं।**
**सङ्घस्स उपट्ठानस्स, सद्धम्मसवनस्स च॥**
**"अधिसीलं सिक्खमानो, सद्धम्मसवने रतो।**
**तिण्णं धम्मानं अतित्तो, हत्थको अविहं गतो"ति॥**

["मैं कभी भगवान के दर्शन से तृप्त नहीं हुआ, संघ की सेवा करने तथा सद्धर्म सुनने से तृप्त नहीं हुआ। श्रेष्ठतर-शील को सीखता हुआ, सद्धर्म सुनने में रत रहकर मैं हत्थक, तीनों विषयों में अतृप्त रहकर अविह (लोक को) गया।"]

## ६. उच्छिष्ट सुत्त

१२९. एक समय भगवान वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाय में विहार करते थे। तब भगवान पूर्वाह्न समय (चीवर) पहन कर तथा पात्र-चीवर लेकर वाराणसी में भिक्षाटन के लिए निकले। गो-योग-पिलक्ष (बरगद के पेड़ के नीचे जहां गायों की हाट लगती थी) स्थान पर भिक्षाटन करते समय भगवान ने एक भिक्षु को देखा जो (ध्यान-) सुख से रिक्त था, जो (ध्यान-) सुख से बाहर था, जो मूढ़-स्मृति था, जो असंप्रज्ञानी था, जो असमाहित था, जो विभ्रांत-चित्त था तथा जो असंयत-इंद्रिय था। उस भिक्षु को देखकर भगवानने यह कहा –

"भिक्षु! तू अपने आपको जूठा सड़ा हुआ न बना। भिक्षु! यह असंभव है कि तू अपने आपको जूठा सड़ा हुआ बनाये, उसमें से दुर्गंध निकले और उस पर मक्खियां न बैठें, न मंडरायें।

भगवान का यह उपदेश सुना तो उस भिक्षु के मन में संवेग जागा। तब भगवान ने वाराणसी में भिक्षाटन कर, भोजन के अनंतर, भिक्षाटन से लौट चुकने पर, भिक्षुओं को आमंत्रित किया –

"भिक्षुओ! मैंने पूर्वाह्न समय (चीवर) पहन, पात्र-चीवर ले वाराणसी में भिक्षाटन के लिए प्रवेश किया। भिक्षुओ! मैंने गो-योग-पिलक्ष में भिक्षाटन के लिए घूमते समय एक भिक्षु को देखा जो (ध्यान-) सुख से रिक्त था, जो (ध्यान-) सुख से बाहर था, जो मूढ़-स्मृति था, जो असंप्रज्ञानी था, जो असमाहित था, जो विभ्रांत-चित्त था, जो असंयत-इंद्रिय था। उस भिक्षु को देखकर मैंने कहा –

"'भिक्षु! तू अपने आपको जूठा सड़ा हुआ न बना। भिक्षु! यह असंभव है कि तू अपने आपको जूठा सड़ा हुआ बनाये, उसमें से दुर्गंध निकले और उस पर मक्खियां न बैठें, न मंडरायें।'

"भिक्षुओ, मेरे इस उपदेश से उस भिक्षु के मन में संवेग पैदा हो गया।

ऐसा कहने पर एक भिक्षु ने भगवानसे कहा –

"भंते! जूठन किसे कहते हैं? सड़ायँध किसे कहते हैं? मक्खियां किसे कहते हैं?

"भिक्षुओ! लोभ जूठन है, क्रोध सड़ायँध है, पापी अकुशल-वितर्क मक्खियां हैं। यह असंभव है कि भिक्षु अपने आपको जूठा जनाये, उसमें से दुर्गंध न निकले और उस पर मक्खियां न बैठें, न मंडरायें।"

**"अगुत्तं चक्खुसोतस्मिं, इन्द्रियेसु असंवुतं।**
**मक्खिकानुपतिस्सन्ति, सङ्कप्पा रागनिस्सिता॥**

**"कटुवियकतो भिक्खु, आमगन्धे अवस्सुतो।**
**आरका होति निब्बाना, विघातस्सेव भागवा॥**

**"गामे वा यदि वारञ्ञे, अलद्धा समथमत्तनो।**
**परेति बालो दुम्मेधो, मक्खिकाहि पुरक्खतो॥**

**"ये च सीलेन सम्पन्ना, पञ्ञायूपसमेरता।**
**उपसन्ता सुखं सेन्ति, नासयित्वान मक्खिका"ति॥**

["जब चक्षु तथा श्रोत्र इंद्रियां अरक्षित रहती हैं, जब इंद्रियां असंयत रहती हैं तब सराग संकल्प रूपी मक्खियां मंडराती हैं। जब भिक्षु 'जूठा' हो जाता है, जब सड़ांध पैदा होती है तब वह निर्वाण से दूर हो जाता है और विनाश का ही हिस्सेदार होता है। जो मूर्ख होता है, जो बुद्धिहीन होता है, वह सम्यक्त्व को बिना प्राप्त किये, मक्खियों से घिरा हुआ, गांव या अरण्य में विचरता रहता है। जो शीलसंपन्न हैं, जो प्रज्ञावान हैं वे मक्खियों का नाश कर शांत हो सुखपूर्वक रहते हैं।"]

## ७. अनुरुद्ध सुत्त (प्रथम)

१३०. एक समय आयुष्मान अनुरुद्ध भगवान के पास गये। पास जाकर भगवान को अभिवादन कर एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठे आयुष्मान अनुरुद्ध ने भगवान से यह कहा –

"भंते! मैं अलौकिक, विशुद्ध, दिव्य चक्षु से देखता हूं कि स्त्रियां शरीर छूटने पर, मरने के बाद अधिकांश में दुर्गति को प्राप्त होती हैं, नरक में उत्पन्न होती हैं। भंते! किन-किन धर्मों से युक्त होने पर स्त्रियां शरीर छूटने पर मरने के बाद दुर्गति को प्राप्त होती हैं, नरक में जन्म ग्रहण करती हैं?

"अनुरुद्ध! तीन धर्मों से युक्त होने पर स्त्री शरीर छूटने पर, मरने के बाद दुर्गति को प्राप्त होती है, नरक में उत्पन्न होती है। कौन-से तीन?

"यहां, अनुरुद्ध! स्त्री पूर्वाह्न में मात्सर्य रूपी मल-युक्त चित्त से घर में निवास करती है, मध्याह्न में ईर्ष्या रूपी मल-युक्त चित्त से घर में निवास करती है, शाम के समय काम-राग रूपी मल-युक्त चित्त से घर में निवास करती है। अनुरुद्ध! इन तीन बातों से युक्त होने पर स्त्री शरीर छूटने पर मरने के बाद दुर्गति को प्राप्त होती है, नरक में उत्पन्न होती है।"

## ८. अनुरुद्ध सुत्त (द्वितीय)

१३१. एक बार आयुष्मान अनुरुद्ध आयुष्मान सारिपुत्त के पास पहुँचे। पास जाकर आयुष्मान सारिपुत्त के साथ कुशलक्षेम की बातचीत की। कुशलक्षेम की बातचीत समाप्त कर आयुष्मान अनुरुद्ध एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठे आयुष्मान अनुरुद्ध ने आयुष्मान सारिपुत्त को कहा –

"सारिपुत्त! मैं अलौकिक, विशुद्ध, दिव्य चक्षु से सहस्रों लोकों को देखता हूं। मेरा आलस्य-रहित प्रयत्न आरंभ है। उपस्थित-स्मृति मूढ़ता विहीन है। शांत-शरीर उत्तेजना-रहित है। समाहित-चित्त एकाग्र है। लेकिन तब भी मेरा चित्त उपादान रहित होकर आस्रवों से विमुक्त नहीं होता।"

"आयुष्मान अनुरुद्ध! आपके मन में जो यह होता है कि मैं अलौकिक, विशुद्ध, दिव्य चक्षु से सहस्रों लोकों को देखता हूं – यह आपका मान है। आयुष्मान अनुरुद्ध! आपके मन में जो यह होता है कि मेरा आलस्य-रहित प्रयत्न आरंभ है, उपस्थित-स्मृति मूढ़ता-विहीन है, शांत-शरीर उत्तेजना-रहित है, समाहित-चित्त एकाग्र है – यह आपका उद्धतपन है। आयुष्मान अनुरुद्ध! आप के मन में जो यह होता है कि मेरा चित्त उपादान रहित होकर आस्रवों से विमुक्त नहीं होता – यह आपका कौकृत्य है। आयुष्मान अनुरुद्ध! अच्छा होगा

यदि आप इन तीनों बातों को छोड़कर, इन तीनों धर्मों को मन से निकालकर चित्त को अमृत-धातु (=निर्वाण) की ओर केंद्रित करें।"

तब आगे चलकर आयुष्मान अनुरुद्ध ने इन तीनों बातों को छोड़कर, इन तीनों धर्मों को मन से निकालकर, चित्त को अमृत-धातु की ओर केंद्रित किया। तब (उन धर्मों से) हट जाने से, अप्रमादी होकर प्रयत्न करने से, यत्नवान होकर विहार करने से आयुष्मान अनुरुद्ध ने अचिरकाल में ही, जिसके लिए कुलपुत्र घर का त्यागकर बेघर हो जाते हैं, उस ब्रह्मचर्य-मय सर्वश्रेष्ठ (पद) को इसी जीवन में, स्वयं जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर विहार किया। उन्होंने जान लिया कि जन्म (का कारण) क्षीण हो गया, ब्रह्मचर्य-वास पूरा हो गया, करणीय समाप्त हो गया और यहां के लिए (अर्थात फिर जन्म लेने के लिए) कुछ शेष नहीं रहा। आयुष्मान अनुरुद्ध अर्हंतों में से एक हुए।

## ९. प्रतिच्छन्न सुत्त

१३२. "भिक्षुओ, ये तीन छिपे-छिपे रहते हैं, खुले नहीं। कौन तीन?

"भिक्षुओ, स्त्रियां गुप्त रूप से काम करती हैं, खुलकर नहीं; भिक्षुओ, ब्राह्मण गुप्त रूप से मंत्र पाठ करते हैं, खुलकर नहीं; भिक्षुओ, मिथ्या-मत वाले अपने मत को गुप्त रखते हैं, खुले नहीं।

"भिक्षुओ, ये तीन खुले चमकते हैं, ढँके नहीं। कौन तीन?

"भिक्षुओ, चंद्रमंडल खुला चमकता है, आच्छादित नहीं; भिक्षुओ, सूर्य-मंडल खुला चमकता है, आच्छादित नहीं; इसी प्रकार तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म खुला चमकता है, आच्छादित नहीं।

"भिक्षुओ, ये तीन खुले चमकते हैं, ढँके नहीं।"

## १०. रेख सुत्त

१३३. "भिक्षुओ, संसार में तीन तरह के व्यक्ति हैं। कौन-से तीन?

"पत्थर पर खिंची रेखा के समान व्यक्ति, पृथ्वी पर खिंची रेखा के समान व्यक्ति, पानी पर खिंची रेखा के समान व्यक्ति।

"भिक्षुओ, पत्थर पर खिंची रेखा के समान व्यक्ति कैसा होता है? भिक्षुओ, एक व्यक्ति प्रायः क्रोधित होता है। उसका वह क्रोध दीर्घकाल तक रहता है। जैसे भिक्षुओ, पत्थर पर खिंची रेखा शीघ्र नहीं मिटती, न हवा से, न पानी से, चिरस्थायी होती है, इसी प्रकार भिक्षुओ, यहां एक व्यक्ति प्रायः क्रोधित होता है। उसका वह क्रोध दीर्घकाल तक रहता है। भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति 'पत्थर पर खिंची रेखा समान व्यक्ति' कहलाता है।

"और भिक्षुओ, पृथ्वी पर खिंची रेखा के समान व्यक्ति कैसा होता है? भिक्षुओ, एक व्यक्ति प्रायः क्रोधित होता है। उसका वह क्रोध दीर्घकाल तक नहीं रहता। जैसे भिक्षुओ, पृथ्वी पर खिंची रेखा शीघ्र मिट जाती है, हवा से वा पानी से, चिरस्थायी नहीं होती। इसी प्रकार भिक्षुओ, यहां एक व्यक्ति प्रायः क्रोधित होता है। उसका क्रोध दीर्घकाल तक नहीं रहता। भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति 'पृथ्वी पर खिंची रेखा समान व्यक्ति' कहलाता है।

"और भिक्षुओ, पानी पर खिंची रेखा के समान व्यक्ति कैसा होता है? भिक्षुओ, कोई-कोईव्यक्ति ऐसा होता है कि यदि कडुवा भी बोला जाय, कठोर भी बोला जाय, अप्रिय भी बोला जाय तो भी वह जुड़ा ही रहता है, मिला ही रहता है, प्रसन्न ही रहता है। जिस प्रकार भिक्षुओ, पानी पर खिंची रेखा शीघ्र विलीन हो जाती है, चिरस्थायी नहीं होती; इसी प्रकार भिक्षुओ, कोई-कोईव्यक्ति ऐसा होता है जिसे यदि कडुवा भी बोला जाय, कठोर भी बोला जाय, अप्रिय भी बोला जाय तो भी वह जुड़ा ही रहता है, मिला ही रहता है, प्रसन्न ही रहता है। भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति 'पानी पर खिंची रेखा समान व्यक्ति' कहलाता है।

"भिक्षुओ, संसार में ये तीन तरह के लोग हैं।"

* * * * *

## (१४) ४. योद्धाजीव वर्ग

### १. योद्धा सुत्त

१३४. "भिक्षुओ, तीन अंगों से युक्त योद्धा राजा के योग्य होता है, राजा का भोग्य होता है, राजा का अंग ही कहलाता है। किन तीन अंगोंसे?

"यहां, भिक्षुओ, जो ऐसा योद्धा होता है वह दूर तक बींधने वाला (तीर फेंकनेवाला) होता है, अक्षणवेधी (विद्युत गति से अचूक निशाना लगाने वाला होता है) तथा बड़े (तख्तों के) समूह को बींधने वाला होता है। भिक्षुओ, इन तीन बातों से युक्त योद्धा राजा के योग्य होता है, राजा का भोग्य होता है, राजा का अंग ही कहलाता है।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, तीन अंगों से युक्त भिक्षु आदरणीय होता है... लोगों के लिए सर्वश्रेष्ठ पुण्य-क्षेत्र होता है। किन तीन अंगों से?

"भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु दूर तक बींधने वाला होता है, अक्षणवेधी होता है तथा बड़े समूह को बींधने वाला।

"भिक्षुओ, भिक्षु दूर तक बींधने वाला कैसे होता है?

"यहां, भिक्षुओ, वह भिक्षु जितना भी रूप है – चाहे भूतकाल का हो, चाहे वर्तमान का, चाहे भविष्य का, चाहे अपने भीतर का हो, अथवा बाहर का, चाहे स्थूल हो अथवा सूक्ष्म, चाहे बुरा हो अथवा भला, चाहे दूर हो अथवा समीप, इस सारे रूप को यथार्थ रूप से प्रज्ञा से इसी प्रकार देखता है कि 'यह न मेरा है, न यह मैं हूं और न यह मेरी आत्मा है।'

"भिक्षुओ, वह भिक्षु जितनी भी वेदना है – चाहे भूतकाल की हो, चाहे वर्तमान की, चाहे भविष्य की, चाहे अपने भीतर की हो, अथवा बाहर की, चाहे स्थूल हो अथवा सूक्ष्म, चाहे बुरी हो अथवा भली, चाहे दूर हो अथवा समीप, इस सारी वेदना को यथार्थ रूप से प्रज्ञा से इसी प्रकार देखता है कि 'यह न मेरी है, न यह मैं हूं और न यह मेरी आत्मा है।'

"भिक्षुओ, वह भिक्षु जितनी भी संज्ञा है – चाहे भूतकाल की हो, चाहे वर्तमान की, चाहे भविष्य की, चाहे अपने भीतर की हो अथवा बाहर की, चाहे स्थूल हो अथवा सूक्ष्म, चाहे बुरी हो अथवा भली, चाहे दूर हो अथवा समीप, इस सारी संज्ञा को यथार्थ रूप से प्रज्ञा से इसी प्रकार देखता है कि 'यह न मेरी है, न यह मैं हूं और न यह मेरी आत्मा है।'

"भिक्षुओ, वह भिक्षु जितने भी संस्कार हैं – चाहे भूतकाल के हों, चाहे वर्तमान के, चाहे भविष्य के, चाहे अपने भीतर के हों अथवा बाहर के, चाहे स्थूल हों अथवा सूक्ष्म, चाहे बुरे हों अथवा भले, चाहे दूर हों अथवा समीप, इन सारे संस्कारों को यथार्थ रूप से प्रज्ञा से इसी प्रकार देखता है कि 'यह न मेरे हैं, न यह मैं हूं और न यह मेरी आत्मा हैं।'

"भिक्षुओ, वह भिक्षु जितना भी विज्ञान है – चाहे भूतकाल का हो, चाहे वर्तमान का, चाहे भविष्य का, चाहे अपने भीतर का हो अथवा बाहर का, चाहे स्थूल हो अथवा सूक्ष्म, चाहे बुरा हो अथवा भला, चाहे दूर हो अथवा समीप, इस सारे विज्ञान को यथार्थरूप से प्रज्ञा से इसी प्रकार देखता है कि 'यह न मेरा है, न यह मैं हूं और न यह मेरी आत्मा है।' इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु दूर तक बींधने वाला होता है।

"और भिक्षुओ, भिक्षु अक्षणवेधी कैसे होता है?

"भिक्षुओ, भिक्षु 'यह दुःख है' इसे यथार्थ रूप से जानता है... 'यह दुःख निरोध की ओर ले जाने वाला मार्ग है', इसे यथार्थ रूप से जानता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु अक्षणवेधी होता है।

"और भिक्षुओ, भिक्षु किस प्रकार बड़े समूह का बींधने वाला होता है?

"भिक्षुओ, भिक्षु महान अविद्या-स्कंध को चीर डालता है। भिक्षुओ, इन तीन अंगों से युक्त भिक्षु आदरणीय होता है... लोगों के लिए सर्वश्रेष्ठ पुण्य-क्षेत्र होता है।"

### २. परिषद सुत्त

१३५. "भिक्षुओ, ये तीन तरह की परिषद होती हैं। कौन-सी तीन?

"प्रबुद्ध एवं विनीत परिषद (अट्ठकथा के अनुसार बिना प्रश्नोत्तर के विनीत अर्थात दुर्विनीत) प्रश्नोत्तर द्वारा विनीत परिषद एवं प्रमाण भर अर्थात जितना विनीत होना चाहिए उसकी मात्रा जानकर विनीत हुई परिषद।

"भिक्षुओ, ये तीन तरह की परिषदें हैं।"

### ३. मित्र सुत्त

१३६. "भिक्षुओ, तीन अंगों से युक्त मित्र की संगति करनी चाहिए। कौन-से तीन?

"भिक्षुओ, जो मित्र कठिनाई से दी जा सकने योग्य वस्तु देता है, कठिनाई से किया जा सकने वाला कार्य करता है, कठिनाई से सहन की जा सकने वाली बात सहन करता है। भिक्षुओ, इन तीन अंगों से युक्त मित्र की संगति करनी चाहिए।"

### ४. उत्पाद सुत्त

१३७. "भिक्षुओ, चाहे तथागत उत्पन्न हों, चाहे तथागत उत्पन्न न हों, यह धर्म-स्थिति, यह धर्म-नियम यूं ही रहता है – सभी संस्कार अनित्य हैं। इस नियम को तथागत पूर्णतया जान जाते हैं, इसका पूर्णतया ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। पूर्णतया जानकर, ज्ञान प्राप्त करके कहते हैं, उपदेश देते हैं, प्रज्ञापित करते हैं, स्थापित करते हैं, उघाड़ते हैं, व्याख्या करते हैं, प्रकट करते हैं कि 'सभी संस्कार अनित्य हैं'।

"भिक्षुओ, चाहे तथागत उत्पन्न हों, चाहे तथागत उत्पन्न न हों, यह धर्म-स्थिति, यह धर्म-नियम यूं ही रहता है –सभी संस्कार दुःख हैं। इस नियम को तथागत पूर्णतया जान जाते हैं, इसका पूर्णतया ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। पूर्णतया जानकर, ज्ञान प्राप्त करके कहते हैं, उपदेश देते हैं, प्रज्ञापित करते हैं, स्थापित करते हैं, स्थापित करते हैं, उघाड़ते हैं, व्याख्या करते हैं, प्रकट करते हैं कि 'सभी संस्कार दुःख हैं'।

"भिक्षुओ, चाहे तथागत उत्पन्न हों, चाहे तथागत उत्पन्न न हों, यह धर्म-स्थिति, यह धर्म-नियम यूं ही रहता है – सभी धर्म (=संस्कृत

धर्म+असंस्कृतधर्म) अनात्म हैं। इस नियम को तथागत पूर्णतया जान जाते हैं, इसका पूर्णतया ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। पूर्णतया जानकर, ज्ञान प्राप्त करके कहते हैं, उपदेश देते हैं, प्रज्ञापित करते हैं, स्थापित करते हैं, उघाड़ते हैं, व्याख्या करते हैं, प्रकट करते हैं किंसभी धर्म अनात्म हैं'।"

### ५. केसकम्बलसुत्त

१३८. "भिक्षुओ, जितने भी धागों से बने वस्त्र हैं उनमें बालों से बना कंबल निकृष्ट कहलाता है। भिक्षुओ! बालों से बना कंबल जाड़े में ठंडा, गरमी में गरम, दुर्वर्ण, दुर्गंधयुक्त, अप्रिय स्पर्श वाला होता है; इसी प्रकार भिक्षुओ, जितने भी श्रमण-मत हैं उनमें मक्खली-मत निकृष्टतम कहा जाता है। भिक्षुओ! मूर्ख मक्खली का यह वाद है, यह मत है – 'न कर्म है, न क्रिया है, न पराक्रम है।'

"भिक्षुओ, भूतकाल में जितने भी अर्हत सम्यक-संबुद्ध हुए हैं, वे सभी भगवान कर्मवादी थे, क्रियावादी थे, पराक्रम-वादी थे। भिक्षुओ, मूर्ख मक्खली उनका भी खंडन (प्रतिषेध) करता है –'न कर्म है, न क्रिया है, न पराक्रम है।'

"भिक्षुओ, भविष्य में भी जो अर्हत, सम्यक संबुद्ध होंगे, वे सभी भगवान कर्मवादी, क्रियावादी तथा पराक्रम-वादी होंगे। भिक्षुओ, मूर्ख मक्खली उनका भी खंडन करता है –'न कर्म है, न क्रिया है, न पराक्रम है।'

"भिक्षुओ, मैं भी इस समय अर्हत सम्यक संबुद्ध हूं। मैं भी कर्मवादी हूं, क्रियावादी हूं, पराक्रम-वादी हूं। भिक्षुओ, मूर्ख मक्खली मेरा भी खंडन करता है –'न कर्म है, न क्रिया है, न पराक्रम है।'

"भिक्षुओ, जैसे नदी के मुँह पर कोई मनुष्य जाल बांधे, बहुत सी मछलियों के अहित के लिए, दुःख के लिए, दुर्भाग्य के लिए तथा विनाश के लिए। इसी प्रकार भिक्षुओ, मूर्ख मक्खली लोक में पैदा हुआ है, मानो लोक में आदमियों को जाल में फँसाने के लिए, बहुत प्राणियों के अहित के लिए, दुःख के लिए, दुर्भाग्य के लिए तथा विनाश के लिए।"

### ६. संपदा सुत्त

१३९. "भिक्षुओ, संपत्तियां तीन हैं। कौन-सी तीन?

"श्रद्धा-संपत्ति, शील-संपत्ति, प्रज्ञा-संपत्ति। भिक्षुओ, ये तीन संपत्तियां हैं।"

### ७. वृद्धि सुत्त

१४०. "भिक्षुओ, ये तीन वृद्धियां हैं। कौन-सी तीन?

"श्रद्धा-वृद्धि, शील-वृद्धि तथा प्रज्ञा-वृद्धि। भिक्षुओ, ये तीन वृद्धियां हैं।"

### ८. अदमनीय सुत्त

१४१. "भिक्षुओ, तीन अश्व-कुमारों (=बछेरों) का उपदेश देता हूं और तीन मनुष्य-कुमारों का। यह सुनो, अच्छी तरह मन में धारण करो, कहता हूं।"

"भंते! अच्छा" कहकर उन भिक्षुओं ने भगवान को प्रतिवचन दिया। भगवान ने यह कहा –

"भिक्षुओ, तीन प्रकार के बछेरे कौन-से होते हैं?

"यहां, भिक्षुओ, एक अश्व-कुमार गतियुक्त होता है, किंतु न तो वर्णयुक्त होता है और न आरोहण करने योग्य (उचित गुणों से संपन्न न होना)। भिक्षुओ, एक अश्व-कुमार गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता है किंतु आरोहण योग्य नहीं होता। भिक्षुओ, एक अश्व-कुमार गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता है और आरोहण योग्य भी। भिक्षुओ, ये तीन प्रकार के बछेरे होते हैं।

"और भिक्षुओ, तीन प्रकार के मनुष्य-कुमार कौन-से होते हैं?

"यहां, भिक्षुओ, एक मनुष्य-कुमार गतियुक्त होता है, किंतु न वर्ण युक्त होता है और न आरोहण योग्य। भिक्षुओ, एक तरुण गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता है पर आरोहण योग्य नहीं। भिक्षुओ, एक तरुण गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता है और आरोहण योग्य भी।

"और भिक्षुओ, मनुष्य-कुमार कैसे गतियुक्त होता है, किंतु न वर्णयुक्त और न आरोहण योग्य?

"यहां, भिक्षुओ, भिक्षु 'यह दुःख है', इसे यथार्थ रूप से जानता है... 'यह दुःख निरोध की ओर ले जाने वाला मार्ग है' इसे यथार्थ रूप से जानता है। यह उसमें 'गति' होना कहता हूं। अभिधर्म और अभिविनय के बारे में प्रश्न पूछे जाने पर कतराजाता है, उत्तर नहीं देता। यह उसमें 'वर्ण' का न होना कहता हूं। वह चीवर-पिंडपात-शयनासन-ग्लान-प्रत्यय-भैषज्य आदि चीजों को प्राप्त करने वाला नहीं होता। यह उसका 'आरोहण योग्य' न होना कहता हूं।

"और भिक्षुओ, मनुष्य-कुमार कैसे गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता है किंतु 'आरोहण योग्य' नहीं होता?

"यहां, भिक्षुओ, भिक्षु 'यह दुःख है' इसे यथार्थ रूप से जानता है... 'यह दुःख निरोध की ओर ले जाने वाला मार्ग है' इसे यथार्थ रूप से जानता है। यह उसमें 'गति' होना कहता हूं। अभिधर्म और अभिविनय के बारे में प्रश्न पूछे जाने पर कतराता नहीं है, उत्तर देता है। यह उसमें 'वर्ण' का होना कहता हूं। वह चीवर-पिंडपात-शयनासन-ग्लान-प्रत्यय-भैषज्य आदि चीजों को पाने वाला नहीं होता। यह उसका 'आरोहण योग्य' न होना कहता हूं।

"और भिक्षुओ, मनुष्य-कुमार कैसे 'गति' युक्त होता है, 'वर्णयुक्त' होता है और 'आरोहण योग्य' भी होता है?

"यहां, भिक्षुओ, भिक्षु 'यह दुःख है' इसे यथार्थ रूप से जानता है... 'यह दुःख निरोध की ओर ले जाने वाला मार्ग है' इसे यथार्थ रूप से जानता है। यह उसमें 'गति' होना कहता हूं। अभिधर्म और अभिविनय के बारे में प्रश्न पूछे जाने पर कतराता नहीं, उत्तर देता है। यह उसमें 'वर्ण' का होना कहता हूं। चीवर-पिंडपात-शयनासन-ग्लान-प्रत्यय-भैषज्य आदि चीजों का पाने वाला होता है। यह उसका 'आरोहण योग्य' होना कहता हूं। भिक्षुओ, इस प्रकार मनुष्य-कुमार गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता है और आरोहण योग्य भी होता है। भिक्षुओ, ये तीन प्रकार के मनुष्य-कुमार हैं।"

### ९. परिष्कृत अश्व सुत्त

१४२. "भिक्षुओ, तीन प्रकार के श्रेष्ठ-अश्वों का उपदेश करता हूं और तीन प्रकार के श्रेष्ठ-पुरुषों का। वह सुनो, अच्छी तरह मन में धारण करो, कहता हूं।"

"अच्छा, भंते" कहकर उन भिक्षुओं ने भगवान को प्रतिवचन दिया। भगवान ने यह कहा –

"भिक्षुओ! तीन प्रकार के श्रेष्ठ-अश्व कौन-से हैं?

"यहां, भिक्षुओ, एक श्रेष्ठ-अश्व गतियुक्त होता है पर न वर्णयुक्त और न आरोहण योग्य। भिक्षुओ, एक श्रेष्ठ-अश्व गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता है, किंतु आरोहण-योग्य नहीं। भिक्षुओ, एक श्रेष्ठ-अश्व गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता है और आरोहण-योग्य भी। भिक्षुओ! ये तीन प्रकार के श्रेष्ठ-अश्व होते हैं।"

"भिक्षुओ! तीन प्रकार के श्रेष्ठ-पुरुष कौन-से होते हैं?

"यहां, भिक्षुओ, एक श्रेष्ठ-पुरुष गतियुक्त होता है पर न वर्णयुक्त और न आरोहण योग्य। भिक्षुओ, एक श्रेष्ठ-पुरुष गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता

है पर आरोहण-योग्य नहीं। भिक्षुओ, एक श्रेष्ठ-पुरुष गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता है और आरोहण-योग्य भी।

"भिक्षुओ, किस प्रकार श्रेष्ठ-पुरुष गतियुक्त होता है, किंतु न वर्णयुक्त होता है और न आरोहण-योग्य?

"भिक्षुओ, भिक्षु पांच ओरंभागीय संयोजनों का क्षय करके न जन्म लेने वाला होता है, वहीं परिनिर्वृत्त होने वाला – उस लोक से न लौटने वाला। यह उसमें 'गति' होना कहता हूं। अभिधर्म और अभिविनय के बारे में प्रश्न पूछे जाने पर कतराता है, उत्तर नहीं देता। यह उसमें 'वर्ण' का न होना कहता हूं। वह चीवर-पिंडपात-शयनासन-ग्लान-प्रत्यय-भैषज्य आदि चीजों का पाने वाला नहीं होता। यह उसका 'आरोहण योग्य' न होना कहता हूं। भिक्षुओ, इस प्रकार श्रेष्ठ-पुरुष गतियुक्त होता है, किंतु न वर्णयुक्त होता है और न आरोहण योग्य।

"भिक्षुओ, श्रेष्ठ-पुरुष किस प्रकार गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता है, किंतु आरोहण योग्य नहीं?

"भिक्षुओ, भिक्षु पांच ओरंभागीय संयोजनों का क्षय कर जन्म न लेने वाला होता है, वहीं परिनिर्वृत्त होने वाला, उस लोक से न लौटने वाला। यह उसमें 'गति' का होना कहता हूं। अभिधर्म और अभिविनय के बारे में प्रश्न पूछने पर कतराता नहीं है, उत्तर देता है। यह उसमें 'वर्ण' का होना कहता हूं। वह चीवर... चीजों को पाने वाला नहीं होता। यह उसका 'आरोहण योग्य' न होना कहता हूं। इस प्रकार भिक्षुओ, श्रेष्ठ-पुरुष गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता है; किंतु आरोहण-योग्य नहीं।

"भिक्षुओ, श्रेष्ठ-पुरुष किस प्रकार गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता है और आरोहण योग्य होता है?

"भिक्षुओ, भिक्षु पांच... न लौटने वाला। यह उसमें 'गति' का होना कहता हूं। अभिधर्म और अभिविनय के बारे में प्रश्न पूछने पर कतराता नहीं, उत्तर देता है। यह उसमें 'वर्ण' का होना कहता हूं। वह चीवर... चीजों का पाने वाला होता है। यह उसका 'आरोहण योग्य' होना कहता हूं। भिक्षुओ, ये तीन श्रेष्ठ-पुरुष हैं।"

### १०. श्रेष्ठ-अश्व सुत्त

१४३. "भिक्षुओ, तीन श्रेष्ठ दान्त (=प्रशिक्षित) अश्वों का उपदेश करता हूं और तीन श्रेष्ठ-पुरुषों का। वह सुनो, अच्छी तरह मन में धारण करो, कहता हूं।

"भिक्षुओ, तीन श्रेष्ठ-अश्व कैसे होते हैं?

"यहां, भिक्षुओ, एक श्रेष्ठ-अश्व गतियुक्त है, न वर्णयुक्त होता है... गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता है, आरोहण योग्य होता है। भिक्षुओ, ये तीन श्रेष्ठ-अश्व हैं।

"भिक्षुओ, ये तीन श्रेष्ठ-अश्व हैं।

"और भिक्षुओ, तीन श्रेष्ठ-पुरुष कैसे होते हैं?

"यहां, भिक्षुओ, एक श्रेष्ठ-पुरुष... गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता है और आरोहण योग्य होता है।

"भिक्षुओ, एक श्रेष्ठ-पुरुष कैसे गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता है और आरोहण योग्य होता है?

"यहां, भिक्षुओ, भिक्षु आस्रवों का क्षय करके अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्ति को इसी जीवन में स्वयं जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर विचरता है। भिक्षुओ, यह उसमें 'गति' का होना कहता हूं। अभिधर्म और अभिविनय के बारे में पूछने पर कतराता नहीं है, उत्तर देता है, यह उसमें 'वर्ण' का होना कहता हूं। वह चीवर-पिंडपात-शयनासन-ग्लान-प्रत्यय-भैषज्य आदि चीजों का पाने वाला हो। यह उसका 'आरोहण योग्य' होना कहता हूं। इस प्रकार भिक्षुओ! श्रेष्ठ-पुरुष गतियुक्त होता है, वर्णयुक्त होता है और आरोहण योग्य होता है।

"भिक्षुओ, ये तीन श्रेष्ठ-पुरुष हैं।"

## ११. मोरनिवाप सुत्त (प्रथम)

१४४. एक बार भगवान राजगृह के मोरनिवाप नाम के परिव्राजकाराम में विहार करते थे। वहां भगवान ने भिक्षुओं को आमंत्रित किया –"भिक्षुओ!" "भदंत" कहकर उन भिक्षुओं ने भगवान को प्रतिवचन दिया। भगवान ने यह कहा –

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त भिक्षु अत्यंत (पूर्ण) प्रवीण होता है, पूर्ण योग-क्षेमी होता है, पूर्ण ब्रह्मचारी होता है, पूर्ण-उद्देश्य (पूर्ण-लक्षी) होता है तथा देव-मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है। किन तीन धर्मों से?

"अशैक्ष शील-स्कंधसे युक्त होता है, अशैक्ष समाधि-स्कंधसे युक्त होता है, अशैक्ष प्रज्ञा-स्कंधसे युक्त होता है। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त भिक्षु

अत्यंत प्रवीण होता है, पूर्ण योग-क्षेमी होता है, पूर्ण ब्रह्मचारी होता है, पूर्ण-उद्देश्य होता है तथा देव-मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है।"

### १२. मोरनिवाप सुत्त (द्वितीय)

१४५. "भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त भिक्षु अत्यंत प्रवीण... देव-मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है। किन तीन धर्मों से?

"ऋद्धि-प्रातिहार्य से युक्त, देशना-प्रातिहार्य से युक्त, अनुशासनी-प्रातिहार्य से युक्त। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त भिक्षु अत्यंत प्रवीण होता है, पूर्ण योग-क्षेमी होता है, पूर्ण ब्रह्मचारी होता है, पूर्ण-उद्देश्य होता है तथा देव-मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है।

### १३. मोरनिवाप सुत्त (तृतीय)

१४६. "भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त भिक्षु अत्यंत प्रवीण... देव-मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है। किन तीन धर्मों से?

"सम्यक-दृष्टि से, सम्यक-ज्ञान से और सम्यक विमुक्ति से। भिक्षुओ, इन धर्मों से युक्त भिक्षु, अत्यंत प्रवीण... देव-मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है।"

* * * * *

## (१५) ५. मंगल वर्ग

### १. अकुशल सुत्त

१४७. "भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त प्राणी ऐसा होता है जैसे लाकर नरक में डाल दिया गया हो। किन तीन धर्मों से?

"अकुशल कायकर्म से, अकुशल वाणी के कर्म से, अकुशल मानसिक-कर्म से। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त प्राणी ऐसा होता है जैसे लाकर नरक में डाल दिया गया हो।

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त प्राणी ऐसा होता है जैसे लाकर स्वर्ग में डाल दिया गया हो। किन तीन धर्मों से?

"कुशल कायकर्म से, कुशल वाणी के कर्म से, कुशल मानसिक-कर्म से। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त प्राणी ऐसा होता है जैसे लाकर स्वर्ग में डाल दिया गया हो।"

### २. सावद्य सुत्त

१४८. "भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त प्राणी ऐसा होता है जैसे लाकर नरक में डाल दिया गया हो। किन तीन धर्मों से?

"सदोष कायकर्मसे, सदोष वाणी के कर्मसे, सदोष मानसिक-कर्मसे। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त प्राणी ऐसा होता है जैसे लाकर नरक में डाल दिया गया हो।

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त प्राणी ऐसा होता है जैसे लाकर स्वर्ग में डाल दिया गया हो। किन तीन धर्मों से?

"निर्दोष कायकर्मसे, निर्दोष वाणी के कर्मसे, निर्दोष मानसिक-कर्मसे। भिक्षुओ, इन धर्मों से युक्त... डाल दिया गया हो।"

### ३. विषम सुत्त

१४९. "भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त... विषम कायकर्मसे, विषम वाणी के कर्मसे, विषम मानसिक-कर्मसे। भिक्षुओ, इन धर्मों से युक्त... नरक में लाकर डाल दिया गया हो।"

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त... अ-विषम कायकर्मसे, अ-विषम वाणी के कर्मसे, अ-विषम मानसिक-कर्मसे।

"भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त... स्वर्ग में डाल दिया गया हो।"

### ४. अशुचि सुत्त

१५०. "...अपवित्र कायकर्मसे, अपवित्र वाणी के कर्मसे, अपवित्र मानसिक-कर्मसे...।

"...पवित्र कायकर्मसे, पवित्र वाणी के कर्मसे, पवित्र मानसिक-कर्मसे। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त प्राणी ऐसा होता है जैसे लाकर स्वर्ग में डाल दिया गया हो।"

### ५. मूलोच्छेद सुत्त (प्रथम)

१५१. "भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त मूर्ख, अव्यक्त, असत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान, सत्त्वहीन हो विचरता है (अर्थात मिथ्या-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), अवगुणी होता है, सदोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा निंदनीय होता है और बहुत अपुण्य कमाता है। किन तीन धर्मों से?

"अकुशल कायकर्म से, अकुशल वाणी के कर्म से, अकुशल मानसिक-कर्मसे।

"भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त मूर्ख, अव्यक्त, असत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान, सत्त्वहीन हो विचरता है (अर्थात मिथ्या-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), अवगुणी होता है, सदोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा निंदनीय होता है और बहुत अपुण्य कमाता है।

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त पंडित, व्यक्त, सत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान नहीं हो सत्त्वयुक्त हो विचरता है (अर्थात सम्यक-दृष्टि-संपन्नहो जीवन बिताता है), गुणी होता है, निर्दोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा प्रशंसनीय होता है और बहुत पुण्य कमाता है। किन तीन धर्मों से?

"कुशल कायकर्मसे, कुशल वाणी के कर्म से, कुशल मानसिक-कर्म से..."

## ६. मूलोच्छेद सुत्त (द्वितीय)

१५२. "...सदोष कायकर्म से, सदोष वाणी के कर्म से, सदोष मानसिक-कर्मसे...

"...निर्दोष कायकर्मसे, निर्दोष वाणी के कर्मसे, निर्दोष मानसिक-कर्म से..."

## ७. मूलोच्छेद सुत्त (तृतीय)

१५३. "...विषम कायकर्म से, विषम वाणी के कर्म से, विषम मानसिक-कर्मसे..."

"...अविषम कायकर्म से, अविषम वाणी के कर्म से, अविषम मानसिक-कर्मसे..."

## ८. मूलोच्छेद सुत्त (चतुर्थ)

१५४. "...अपवित्र कायकर्मसे, अपवित्र वाणी के कर्म से, अपवित्र मानसिक-कर्मसे...

"...पवित्र कायकर्मसे, पवित्र वाणी के कर्मसे, पवित्र मानसिक-कर्मसे।

"भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त पंडित, व्यक्त, सत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान नहीं हो सत्त्वयुक्त हो विचरता है (अर्थात सम्यक-दृष्टि-संपन्नहो जीवन बिताता है), गुणी होता है, निर्दोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा प्रशंसनीय होता है और बहुत पुण्य कमाता है।"

### ९. वंदना सुत्त

१५५. "भिक्षुओ, ये तीन वंदनाएं हैं। कौन-सी तीन?

"काय-वंदना, वाणी की वंदना, मन की वंदना। भिक्षुओ! ये तीन वंदनाएं हैं।"

### १०. पूर्वाह्न सुत्त

१५६. "भिक्षुओ, जो प्राणी पूर्वाह्न के समय शरीर से सदाचरण करते हैं, वाणी से सदाचरण करते हैं, मन से सदाचरण करते हैं, भिक्षुओ, उन प्राणियों का वह सुपूर्वाह्न है। भिक्षुओ, जो प्राणी मध्याह्न में शरीर से सदाचरण करते हैं...मन से सदाचरण करते हैं उन प्राणियों का वह सुमध्याह्न है। भिक्षुओ, जो प्राणी शाम के समय शरीर से सदाचरण करते हैं...मन से सदाचरण करते हैं, भिक्षुओ, उन प्राणियों का वह सुसायह्न है।"

**"सुनक्खत्तं सुमङ्गलं, सुप्पभातं सुहुट्ठितं।**
**सुखणो सुमुहुत्तो च, सुयिट्ठं ब्रह्मचारिसु॥**
**"पदक्खिणं कायकम्मं, वाचाकम्मं पदक्खिणं।**
**पदक्खिणं मनोकम्मं, पणीधि ते पदक्खिणे।**
**पदक्खिणानि कत्वान, लभन्तत्थे पदक्खिणे॥**
**"ते अत्थलद्धा सुखिता, विरुळ्हा बुद्धसासने।**
**अरोगा सुखिता होथ, सह सब्बेहि ञातिभी"ति॥**

["(वही) सुनक्षत्र है, सुमंगल है, सुप्रभात है, सु-उत्थान है, सु-क्षण है, सु-मुहूर्त है, ब्रह्मचारियों के साथ सु-यज्ञ है। (शुभ) कायकर्मही प्रदक्षिणा है, वाणी का कर्मही प्रदक्षिणा है, मानसिक-कर्मप्रदक्षिणा है, प्रणिधान प्रदक्षिणा है। प्रदक्षिणा करने से यहां प्रदक्षिणा (उन्नति) की प्राप्ति होती है। उन अर्थों को प्राप्त करके सभी संबंधियों के साथ बुद्ध-शासन में अर्थसंपन्न हों, निरोग हों, सुखी हों।"]

* * * * *

## (१६) ६. अचेलक वर्ग

१५७-१६३. "भिक्षुओ, तीन मार्ग (पटिपदा) हैं। कौन-से तीन?

"शिथिल मार्ग; कठोर मार्ग, मध्यम मार्ग।

"भिक्षुओ, शिथिल मार्ग कौन-सा है?

"यहां, भिक्षुओ, किसी-किसीका ऐसा मत होता है, ऐसी दृष्टि होती है – कामभोगों में दोष नहीं है। वह कामभोगों में जा पड़ता है। भिक्षुओ, यह 'शिथिल मार्ग' कहलाता है।

"भिक्षुओ, अतियों का कठोरमार्ग कौन-सा है?

"यहां, भिक्षुओ, कोई-कोईनग्न होता है, शिष्टाचार-शून्य, हाथ चाटने वाला, 'भदंत आयें' कहनेपर न आने वाला, 'भदंत खड़े रहें' कहनेपर खड़ा न रहने वाला, लाया हुआ न खाने वाला, उद्देश्य से बनाया हुआ न खाने वाला और निमंत्रण भी न स्वीकार करनेवाला होता है। वह न घड़े में से दिया हुआ लेता है, न ऊखल में से दिया हुआ लेता है, न किवाड़की ओट से दिया हुआ लेता है, न मेढ़े के बीच में आ जाने से दिया हुआ, न दंड के बीच में पड़ जाने से लेता है, न मूसल के बीच में आ जाने से लेता है। वह दो जने खाते हों, उनमें से एक के उठकर देने पर नहीं लेता है, न गर्भिणी का दिया लेता है, न बच्चे को दूध पिलाती हुई का दिया लेता है, न पुरुष के पास गई हुई का दिया लेता है, न संग्रह किये हुए अन्न में से पकाया हुआ लेता है, न जहां कुत्ता खड़ा हो वहां से लेता है, न जहां मक्खियां उड़ती हों वहां से लेता है। वह न मछली खाता है, न मांस खाता है। न सुरा पीता है, न मेरय पीता है, न चावल का पानी पीता है। वह या तो एक ही घर से लेकर खाने वाला होता है या एक ही कौर खाने वाला; दो घरों से लेकर खाने वाला होता है या दो ही कौर खाने वाला... सात घरों से लेकर खाने वाला होता है या सात कौर खाने वाला। वह एक ही छोटी प्लेट से भी गुजारा करनेवाला होता है... सात छोटी प्लेटों से भी गुजारा करनेवाला होता है। वह दिन में एक बार भी खाने वाला होता है, दो दिन में एक बार भी खाने वाला होता है... सात दिन में एक बार भी खाने वाला होता है; इस प्रकार वह पंद्रह दिन में एक बार खाकर भी रहता है। वह शाक खाने वाला भी होता है, स्यामाक खाने वाला भी होता है, नीवार (धान) खाने वाला भी होता है, दद्दुल (धान) खाने वाला भी होता है, हट (शाक) खाने वाला भी होता है, कणाज-भात खाने वाला भी होता है, आचाम खाने वाला भी होता है, खली खाने वाला भी होता है, तिनके (घास) खाने वाला भी होता है, गोबर खाने वाला भी होता है, जंगल के पेड़ों से गिरे फल-मूल को खाने वाला भी होता है। वह सन के कपड़े भी धारण करता है, सन-मिश्रित कपड़े भी धारण करता है, शव-वस्त्र (कफन)भी पहनता है, फेंके हुए वस्त्र भी पहनता है, वृक्ष-विशेष की छाल के कपड़े भी पहनता है, अजिन (-मृग) की खाल भी पहनता है, अजिन (-मृग) की चमड़ी से बनी पट्टियों से बुना वस्त्र भी पहनता है, कुश का बना वस्त्र भी पहनता है, छाल (वाक) का वस्त्र भी पहनता है,

फलक (छाल) का वस्त्र भी पहनता है, केशोंसे बना कंबल भी पहनता है, पूंछ के बालों का बना कंबल भी पहनता है, उल्लू के परों का बना वस्त्र भी पहनता है। वह केश-दाढ़ी का लुंचन करने वाला भी होता है। वह बैठने का त्याग कर निरंतर खड़ा ही रहने वाला भी होता है। वह उकडूं बैठ कर प्रयत्न करने वाला भी होता है, वह कांटों की शय्या पर सोने वाला भी होता है। प्रातः, मध्याह्न, सायं – दिन में तीन बार पानी में जाने वाला होता है। इस तरह, वह नाना प्रकार से शरीर को कष्ट पीड़ा पहुँचाता हुआ विहार करता है। भिक्षुओ, यह 'कठोर मार्ग' कहलाता है।

"और भिक्षुओ, 'मध्यम मार्ग' कौन-सा है?

"यहां, भिक्षुओ, भिक्षु काया में कायानुपश्यी होकर विहार करता है, श्रमशील, संप्रज्ञानी, स्मृतिमान तथा लोक में अभिध्या (लोभ)-दौर्मनस्य (द्वेष) को हटाकर; वेदनाओं में वेदनानुपश्यी होकर...चित्त में चित्तानुपश्यी होकर... धर्मों में धर्मानुपश्यी होकर विहार करता है. श्रमशील, संप्रज्ञानी, स्मृतिमान तथा लोक में अभिध्या (लोभ)-दौर्मनस्य को हटाकर। भिक्षुओ, यह 'मध्यम मार्ग' कहलाता है। भिक्षुओ, ये तीन मार्ग हैं। ""भिक्षुओ, ये तीन मार्ग हैं। कौन-से तीन?

"शिथिल, कठोर मार्ग, मध्यम मार्ग।

"और भिक्षुओ, शिथिल मार्ग कौन-सा है? (पूर्वानुसार) भिक्षुओ, यह 'शिथिल मार्ग' कहलाता है।

"और भिक्षुओ, कठोर मार्ग कौन-सा है?

"...(पूर्वानुसार) भिक्षुओ, इसे 'कठोर मार्ग' कहते हैं।

"और भिक्षुओ, मध्यम मार्ग क्या है?

"यहां, भिक्षुओ, भिक्षु अनुत्पन्न पापी अकुशल-धर्मों को उत्पन्न न होने देने के लिए संकल्प करता है, प्रयत्न करता है, परिश्रम करता है, मन को काबू में रखता है। उत्पन्न पापी अकुशल-धर्मों का प्रहाण करने के लिए संकल्प करता है, प्रयत्न करता है, परिश्रम करता है, मन को काबू में रखता है। अनुत्पन्न कुशल धर्मों को उत्पन्न करने के लिए संकल्प करता है, प्रयत्न करता है, परिश्रम करता है, मन को काबू में रखता है। उत्पन्न कुशल धर्मों को स्थित रखने के लिए, लोप न होने देने के लिए, अधिकाधिक बढ़ाने के लिए संकल्प करता है, प्रयत्न करता है, परिश्रम करता है, मन को काबू में रखता है। ...छंद-प्रयत्न-संस्कार युक्त ऋद्धि-पथ का अभ्यास करता है, वीर्य-समाधि, चित्त-समाधि, वीमंसा

(मीमांसा)-समाधि और प्रधान (=प्रयत्न) तथा संस्कार से युक्त ऋद्धि-पथ का अभ्यास करता है... श्रद्धा-इंद्रिय का अभ्यास करता है, वीर्य-इंद्रिय का अभ्यास करता है, स्मृति-इंद्रिय का अभ्यास करता है, समाधि-इंद्रिय का अभ्यास करता है, प्रज्ञा-इंद्रिय का अभ्यास करता है... श्रद्धा-बल का अभ्यास करता है, वीर्य-बल का अभ्यास करता है, स्मृति-बल का अभ्यास करता है, समाधि-बल का अभ्यास करता है, प्रज्ञा-बल का अभ्यास करता है, स्मृति-संबोधि अंग का अभ्यास करता है, धर्मविचय-संबोधि अंग का अभ्यास करता है, वीर्य-संबोधि अंग का अभ्यास करता है, प्रीति-संबोधि अंग का अभ्यास करता है, प्रश्रब्धि-संबोधि अंग का अभ्यास करता है, समाधि-संबोधि अंग का अभ्यास करता है, उपेक्षा-संबोधि अंग का अभ्यास करता है, सम्यक-दृष्टि का अभ्यास करता है, सम्यक-संकल्प का अभ्यास करता है, सम्यक-वाणी का अभ्यास करता है, सम्यक-कर्मान्त का अभ्यास करता है, सम्यक-आजीविका का अभ्यास करता है, सम्यक व्यायाम का अभ्यास करता है, सम्यक स्मृति का अभ्यास करता है तथा सम्यक-समाधि का अभ्यास करता है। भिक्षुओ, यह 'मध्यम मार्ग' कहलाता है। भिक्षुओ, ये तीन मार्ग हैं।"

## (१७) ७. कर्म पर्याय

१६४-१८३. "भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त प्राणी ऐसा होता है जैसे लाकर नरक में डाल दिया गया हो। किन तीन धर्मों से? स्वयं प्राणी-हिंसा करता है, दूसरे को प्राणी-हिंसा के लिए प्रेरित करता है और प्राणी-हिंसा का समर्थन करता है। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त प्राणी ऐसा ही होता है जैसे लाकर नरक में डाल दिया गया हो।

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त प्राणी ऐसा होता है जैसे लाकर स्वर्ग में डाल दिया गया हो। किन तीन धर्मों से?

"स्वयं प्राणी-हिंसा से विरत रहता है, दूसरे को प्राणी-हिंसा के लिए प्रेरित नहीं करता और प्राणी-हिंसा का समर्थन नहीं करता...

"...स्वयं चोरी करता है, दूसरे को चोरी के लिए प्रेरित करता है और चोरी का समर्थन करता है... स्वयं चोरी से विरत रहता है, दूसरे को चोरी के लिए प्रेरित नहीं करता और चोरी का समर्थन नहीं करता है...

"...स्वयं कामभोग संबंधी मिथ्याचार करने वाला होता है, दूसरे को कामभोग संबंधी मिथ्याचार के लिए प्रेरित करता है और कामभोग संबंधी

मिथ्याचार का समर्थन करता है... स्वयं कामभोग संबंधी मिथ्याचार से विरत होता है, दूसरे को कामभोग संबंधी मिथ्याचार के लिए प्रेरित नहीं करता और कामभोग संबंधी मिथ्याचार से विरत रहने का समर्थन करता है...

"...स्वयं झूठ बोलता है, दूसरे को झूठ बोलने के लिए प्रेरित करता है और झूठ बोलने का समर्थन करता है... स्वयं झूठ बोलने से विरत रहता है, दूसरे को झूठ बोलने के लिए प्रेरित नहीं करता और झूठ बोलने से विरत रहने का समर्थन करता है...

"...स्वयं चुगली खाता है, दूसरे को चुगली खाने के लिए प्रेरित करता है और चुगली खाने का समर्थन करता है... स्वयं चुगली खाने से विरत रहता है, दूसरे को चुगली खाने के लिए प्रेरित नहीं करता और चुगली खाने से विरत रहने का समर्थन करता है...

"...स्वयं कठोर बोलता है, दूसरे को कठोर बोलने के लिए प्रेरित करता है और कठोर बोलने का समर्थन करता है... स्वयं कठोर बोलने से विरत रहता है, दूसरे को कठोर बोलने के लिए प्रेरित नहीं करता है और कठोर बोलने से विरत रहने का समर्थन करता है...

"...स्वयं व्यर्थ बोलने वाला होता है, दूसरे को व्यर्थ बोलने के लिए प्रेरित करता है और व्यर्थ बोलने का समर्थन करता है... स्वयं व्यर्थ बोलने से विरत रहता है, दूसरे को व्यर्थ बोलने के लिए प्रेरित नहीं करता है और व्यर्थ बोलने से विरत रहने का समर्थन करता है...

"...स्वयं लोभी होता है, दूसरे को लोभ के लिए प्रेरित करता है और लोभ का समर्थन करता है... स्वयं लोभ से विरत रहता है, दूसरे को लोभ के लिए प्रेरित नहीं करता है और लोभ से विरत रहने का समर्थन करता है...

"...स्वयं क्रोधी होता है, दूसरे को क्रोध के लिए प्रेरित करता है और क्रोध का समर्थन करता है।... स्वयं क्रोध से विरत रहता है, दूसरे को क्रोध के लिए प्रेरित नहीं करता है और क्रोध से विरत रहने का समर्थन करता है।

"...स्वयं मिथ्या-दृष्टि वाला होता है, दूसरे को मिथ्या-दृष्टि की ओर प्रेरित करता है और मिथ्या-दृष्टि का समर्थन करता है... स्वयं सम्यक-दृष्टि वाला होता है, दूसरे को सम्यक-दृष्टि की ओर प्रेरित करता है और सम्यक-दृष्टि का समर्थन करता है।

"भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त प्राणी ऐसा होता है जैसे लाकर स्वर्ग में डाल दिया गया हो।"

## (१८) ८. राग पर्याय

१८४. "भिक्षुओ, राग के अभिज्ञान के लिए इन तीन धर्मों की भावना करनी चाहिए।

"किन तीन की?

"शून्यता-समाधि की, अनिमित्त-समाधि की तथा अप्रणिहित-समाधि की। भिक्षुओ, राग के अभिज्ञान के लिए इन तीन धर्मों की भावना करनी चाहिए।

"भिक्षुओ, राग के परिज्ञान के लिए, परिक्षय के लिए, प्रहाण के लिए, क्षय के लिए, व्यय के लिए, वैराग्य के लिए, निरोध के लिए, त्याग के लिए तथा प्रतिनिसर्ग के लिए इन तीन धर्मों की भावना करनी चाहिए।

"द्वेष के ...मोह के ...क्रोधके ...,उपनाह के ...,म्रक्ष के ...,प्रदास के ..., ईर्ष्या के ..., मात्सर्य के ..., माया के ..., शठता के ..., जड़ता के ..., सारंभ के ...,मान के ...,अतिमान के ...,मद के ...तथा प्रमाद के अभिज्ञान के लिए, परिज्ञान के लिए, परिक्षय के लिए, प्रहाण के लिए, क्षय के लिए, व्यय के लिए, वैराग्य के लिए, निरोध के लिए, त्याग के लिए तथा प्रतिनिसर्ग के लिए इन तीन धर्मों की भावना करनी चाहिए।"

भगवान ने यह कहा। उन भिक्षुओं ने संतुष्ट होकर भगवान के भाषण का अभिनंदन किया।

**एकक, द्विक तथा त्रिक निपात समाप्त।**